इकाई 13 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था का प्रबंधन

संरचना

13.0 प्रस्तावना

13.1 उद्देश्य

13.2 प्रबंधन के प्रकार्य एवं प्रक्रियाएँ : एक परिदृश्य

- 13.2.1 संस्थागत प्रबंधन : मुख्य प्रकार्य
- 13.2.2 संस्थागत निर्णयन प्रक्रिया
- 13.2.3 प्रबंधन सूचना तंत्र

13.3 प्रबन्धन मुद्दे

- 13.3.1 गुणवत्ता नियंत्रण एवं सेवा प्रबन्धन
- 13.3.2 उत्तरदायित्व
- 13.3.3 तकनीकी नवाचारों का प्रबन्धन
- 13.3.4 विपणन
- 13.3.5 संजाल/प्रसार

13.4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था प्रबन्धन : विभिन्न प्रतिमान

- 13.4.1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के प्रतिमान/व्यवस्थाएँ
- 13.4.2 एकल एवं द्वैध व्यवस्था वाले संस्थानों की तुलना
- 13.4.3 दूरस्थ शिक्षा संस्थानों का कन्सोर्टियम प्रतिमान

13.5 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की संगठनात्मक संरचना

- 13.5.1 इग्नू की संगठनात्मक संरचना
- 13.5.2 राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों की संगठनात्मक संरचना
- 13.5.3 पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थानों/दूरस्थ शिक्षा निदेशालयों की संगठनात्मक संरचना

13.6 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के उपतंत्र

- 13.6.1 प्रशासनिक उपतंत्र
- 13.6.2 शैक्षणिक उपतंत्र
- 13.6.3 औद्योगिक उपतंत्र

13.7 सारांश

13.8 "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर

13.9 संदर्भ ग्रंथ

13.10 इकाई अंत अभ्यास

13.0 प्रस्तावना

इस पाठ्यक्रम के प्रथम खंड में आपने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के उद्भव एवं विकास के बारे में जानकारी प्राप्त की। द्वितीय खंड में हमने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के संसाधनों के स्वरूप तथा विकास एवं अन्य विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। तृतीय खंड में हमने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में विद्यार्थी सहायता सेवाओं के बारे में समझा। इन तीन खंडों के अध्ययन के उपरांत आपको मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के विकास, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, विद्यार्थी आँकलन एवं मूल्यांकन प्रक्रिया समेत मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के बारे में समग्र बोध

हो चुका होगा। फिर भी, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के बारे में आपकी समझ अधूरी है यदि आपको मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के नियोजन एवं प्रबन्धन से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी न हो।

इसलिए, इस खंड में (खंड 4, जो इस पाठ्यक्रम का अंतिम खंड है), हमारा प्रयास आपको मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के योजना एवं प्रबन्धन के बारे में जानकारी प्रदान करना है। इस प्रयास के रूप में, इस इकाई में हम दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के प्रबन्धन व्यवस्था की रूपरेखा, दूरस्थ शिक्षा के प्रतिमान, दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के विभिन्न उपतंत्रों में अंतर्संबंध तथा इन संस्थानों के प्रकार्यों, प्रक्रियाओं तथा प्रबन्धन मुद्दों और प्रतिमानों के बारे में जानेंगे।

13.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के प्रबन्धन में निहित प्रकार्यों एवं प्रक्रियाओं के बारे में समझ सकेंगे;
- विभिन्न मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की संगठनात्मक संरचना का वर्णन कर सकेंगे;
- प्रबंधन सूचना तंत्र की भूमिका की व्याख्या कर सकेंगे;
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के विभिन्न प्रतिमानों की तुलना कर सकेंगे;
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के प्रबन्धन में निहित मुद्दों पर चर्चा कर सकेंगे; और
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न कार्यात्मक उप-प्रणालियों या उपतंत्रों के मध्य अंतर्संबंध का विश्लेषण कर सकेंगे।

13.2 प्रबंधन के प्रकार्य एवं प्रक्रियाएँ : एक परिदृश्य

किसी शिक्षण संस्थान के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित निर्णयन प्रक्रिया एवं उसकी प्रकृति पर संगठन और संरचना का गहरा प्रभाव होता है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान भी इससे अलग नहीं हैं। दूरस्थ शिक्षा संस्थान की संरचना इसको एवं उपतंत्रों के संगठन एवं प्रबन्धन को निर्धारित करती हैं। दूसरे शब्दों में, दूरस्थ शिक्षा संस्थान की प्रकृति और प्रकार के आधार पर इसकी संरचना निर्धारित होती है। एक संस्थान स्वतंत्र एवं स्वायत्त हो सकता है, चाहे एकल व्यवस्था वाला या दोहरी व्यवस्था वाला (जिसमें औपचारिक एवं दूरस्थ शिक्षा दोनों का प्रावधान होता है)। दोहरी व्यवस्था वाले संस्थानों में अध्यापक, दोनों प्रकार के विद्यार्थियों (नियमित एवं दूरस्थ विद्यार्थी) को पढ़ा सकता है या फिर इनमें अलग-अलग अध्यापकों का प्रावधान हो सकता है। एक संस्था चाहे किसी भी प्रकार का हो, उसमें संगठनात्मक संरचना या तो ऊपर से नीचे उपागम या फिर नीचे से ऊपर की उपागम (सहयोगी प्रतिमान) अपनाई जा सकती है। विभिन्न उपतंत्रों को स्वतंत्र रूप से संचालित किया जा सकता है और प्रबंधन सूचना तंत्र (Management Information System - MIS) की सहायता से समन्वय किया जा सकता है या केन्द्रीय स्तर पर इन्हें नियंत्रित या पर्यवेक्षण किया जा सकता है। व्यवस्था एवं इसके उपतंत्रों में कार्यक्रम मूल्यांकन अभ्यास एवं इन अभ्यासों से प्राप्त परिणामों का उपयोग संस्था की संगठनात्मक संरचना पर निर्भर करता है।

निम्नलिखित तीन उपभागों में हम दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की संरचना एवं प्रबन्धन के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। यह विभिन्न उप प्रणालियों या उप तंत्रों के प्रबंधन पर अधिक चर्चा और इस इकाई के अलग भागों में प्रस्तुत कुछ मुद्दों के विश्लेषण के लिए मजबूत आधार प्रदान करेगा।

13.2.1 संस्थागत प्रबंधन : मुख्य प्रकार्य

संस्थागत प्रबंधन में, संस्था निर्माण एवं विकास केन्द्रीय पहलू हैं। एक संगठन आंतरिक रूप से विकसित होने का प्रयास करता है ताकि यह विकसित रूप से कार्य करने की क्षमता ग्रहण कर सके तथा समाज पर एक प्रभाव छोड़ सके। दूसरे शब्दों में, एक संस्था अपने कार्यों में नवाचार एवं उत्कृष्टता प्रदर्शित करने का प्रयास करती है, तो साथ ही साथ यह समाज में परिवर्तन लाने और उसके प्रबंधन करने में भी सहायक होती है। प्रभावशीलता एवं कार्य कुशलता, किसी भी सुप्रबंधित संस्थान के महत्वपूर्ण सिद्धान्त हैं जो अपनी संस्कृति और लोकनीति स्थापित करने का प्रयास करता है।

एक संस्थान को आवश्यक सहायता एवं लचीलापन प्रदान करना चाहिए ताकि सभी को इससे जुड़े होने में गौरव महसूस हो। इसे प्रत्येक के समक्ष कुछ चुनौतियाँ प्रस्तुत करनी चाहिए ताकि विकास हो सके। संस्थानों को परिवर्तन एवं नवाचार लाने चाहिए और अच्छी तरह प्रबंधित करना चाहिए जिससे सामाजिक विकास का रास्ता साफ हो सके। इसके लिए संस्थान को सर्वप्रथम नीति बनानी चाहिए तथा संगठन के प्रत्येक सदस्य की प्रकार्य, शक्तियाँ एवं जिम्मेदारियाँ प्रदान करनी चाहिए। उत्तरदायित्व तय होना चाहिए तथा व्यक्तिगत या सामूहिक कार्य के लिए प्रावधान होना चाहिए। संस्थान के कार्यों में सामूहिकता एवं सभी की भागीदारी झलकनी चाहिए।

संगठन के अपने संदेश लक्ष्य, उद्देश्य तथा उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कार्य योजना होती है। नवाचारों एवं बाहरी बदलावों या वातावरण में परिवर्तन के अनुसार नीतियाँ लचीली होनी चाहिए। इसलिए, संगठन को संस्थागत लक्ष्यों एवं कार्य योजना के अनुसार अपनी शक्तियों का उपयोग एवं जिम्मेदारियों का निर्वहन करना चाहिए। इसके लिए एक स्पष्ट और ध्यान केंद्रित संगठनात्मक नीति की आवश्यकता है। एक संगठन में इसके सदस्यों को कार्यों का आवंटन करने के लिए आवश्यक प्रबंध जैसे संसाधन, प्रशिक्षण, आदि की व्यवस्था होनी चाहिए। निर्णयन की जिम्मेदारी उच्च प्रबंधन स्तर की होती है, इसलिए ऊपर से नीचे की ओर का प्रतिमान या उपागम अपनाना चाहिए। लेकिन, एक संगठन अच्छे ढंग से कार्य करता है तथा अपने उद्देश्यों को अधिक प्राप्त कर सकता है यदि नीचे से ऊपर की ओर उपागम को निर्णय निर्धारण एवं कार्यान्वयन में अपनाया जाता है। पूर्व की तुलना में उत्तरार्द्ध बेहतर होगा क्योंकि इससे आपसी सहयोग, सामूहिक जिम्मेदारी तथा संस्थागत प्रतिबद्धता विकसित होती है।

संगठन में उचित और निष्पक्ष संप्रेषण होना चाहिए क्योंकि इसकी कमी के कारण संगठन में आलस्य, अव्यवस्था तथा संशयवाद की स्थिति पैदा होती है तथा संगठन की कार्यशीलता प्रभावित होती है। एक सुविकसित प्रबंधन सूचना तंत्र संगठन को प्रभावी एवं कुशल कार्य पद्धति की तरफ लेकर जाता है।

संगठन, इसकी कार्य पद्धति, कर्मचारी तथा संसाधनों का समय-समय पर मूल्यांकन होना चाहिए। मूल्यांकन का कार्य, संगठन की विभिन्न इकाइयों या विभागों द्वारा किया जाता है जिन्हें इसके लिए संस्थागत प्रमुख या प्राधिकरण द्वारा उपयुक्त शक्तियाँ प्रदान की जाती हैं। मूल्यांकन चर में संस्था ही शामिल होती है – नीति और मिशन, कर्मियों और उनके

निष्पादन, प्रक्रियाओं, संसाधनों का उपयोग और नियमित निगरानी और कार्यक्रम मूल्यांकन के मजबूत तंत्र हैं जिससे संगठन के प्रभावशीलता और दक्षता के उच्च स्थर को बनाये रखने के लिए उसे आवश्यक प्रतिपुष्टि प्राप्त होती है। मूल्यांकन, लोकतंत्रात्मक एवं सहयोगात्मक तरीके से होना चाहिए जिसमें संगठन के कर्मचारियों की भागीदारी होनी चाहिए ताकि मूल्यांकन के परिणामों का उपयोग संस्था को अपने सुधार हेतु करने के लिए अधिक संभावना हो। संस्था की कमियों तथा अच्छाइयों को पहचाना जाना चाहिए तथा प्रबन्धन कौशलों को विकसित किया जाना चाहिए ताकि संगठनात्मक प्रभावशीलता सम्बन्धी निर्णयों को प्रभावी रूप से कार्यान्वित किया जा सके।

13.2.2 संस्थागत निर्णयन प्रक्रिया

संस्था में निर्णयन प्रक्रिया संगठन के कामकाज तथा कार्यक्रम मूल्यांकन की आवश्यकता और कार्यप्रणाली को निर्धारित करती है। संस्था में कुछ प्राधिकारी होते हैं जो संस्था के नियमों, कानूनों, अधिनियमों इत्यादि के अंतर्गत कार्य करते हैं तथा समग्र नीति निर्देशन प्रदान करते हैं। परंतु, दैनिक कार्यों के लिए संस्था या तो ऊपर से नीचे या नीचे से ऊपर की उपागम या सहभागिता उपागम को अपनाना चाहिए ताकि संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन (Total Quality Management - TQM) के अंतर्गत निर्णय लिए जा सके।

संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन का अभिप्राय है कि संस्था का प्रत्येक व्यक्ति एवं गतिविधि संस्था के लक्ष्यों तथा उद्देश्यों की प्राप्ति की दिशा में निर्देशित होता है। एक सुव्यवस्थित प्रबंधन सूचना तंत्र संप्रेषण तथा प्रभावी निर्णय लेने में सहायक होता है। प्रबंधन सूचना तंत्र का दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में अन्य औपचारिक शिक्षण संस्थानों की तुलना में ज्यादा महत्व एवं आवश्यकता है।

13.2.3 प्रबंधन सूचना तंत्र

प्रबंधन सूचना तंत्र में अनवरत्, अंतराल पर सूचनाओं का एकत्रीकरण, प्रक्रमण एवं पुनः प्राप्त करना शामिल होता है ताकि प्रबन्धन को प्रभावी किया जा सके। सही एवं उचित निर्णय लेने के लिए प्रणाली के निवेश, प्रक्रिया तथा उत्पादन एवं बाधाओं या समस्याओं के बारे में पता लगाने के लिए सूचना या डेटा बहुत आवश्यक है। प्रबंधन सूचना तंत्र के आधार पर मजबूतियों, कमियों, अवसरों एवं बाधाओं (SWOT - Strengths, Weaknesses, Opportunities, and Threats) का विश्लेषण, संस्था को आगे बढ़ने एवं नए बदलावों का प्रबन्धन करने के लिए बहुत सहायक होता है। प्रबंधन सूचना तंत्र एक निर्णय निर्माता को निवेश, प्रक्रिया तथा उत्पादन के बारे में उचित फैसले लेने में सक्षम बनाता है। प्रबंधन सूचना तंत्र सतत्, समयबद्ध उचित एवं उपयोगी होना चाहिए।

दूरस्थ शिक्षा संस्थान (distance teaching institution - DTI) में एक केन्द्रीय इकाई होनी चाहिए जो संस्था एवं इसकी विभिन्न पहलुओं, कार्यात्मक इकाइयां और गतिविधियों के बारे में सूचनाएँ एकत्रित एवं संग्रहित करे। इस इकाई के सूचना का उपयोग करने वालों से लगातार संवाद होते रहना चाहिए ताकि उच्च प्राधिकारियों को सही निर्णय लेने के योग्य बनाया जा सके। हालाँकि इसमें सूचना नियंत्रण का बहुत प्रभाव पड़ता है जो सूचना प्रसारण के बजाय उसके नियंत्रण पर अधिक बल देते हैं। यदि उचित एवं सूचनाओं पर आधारित निर्णय नहीं होंगे तो कर्मचारी संशयवादी हो जाएँगे तथा केन्द्रीय इकाई को उचित सूचनाएँ ही प्रदान नहीं करेंगे। अतः प्रबन्धन सूचना तंत्र का उचित प्रबंधन आवश्यक है। यह आवश्यक है कि एकत्रित सूचनाओं को स्थानीय क्षेत्रीय नेटवर्क – (local area network - LAN) – के द्वारा सही रूप में अभिक्रमित एवं संग्रहित किया जाए।

13.3 प्रबन्धन मुद्दे

किसी मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्था एवं इसके उपतंत्रों के प्रबन्धन में बहुत सारे कारक शामिल होते हैं जो संस्था के प्रबन्धन, विकास एवं प्रबन्धन की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। निम्नलिखित उपभागों में हम इन्हीं कुछ महत्वपूर्ण कारकों के बारे में चर्चा करेंगे जिन्हें किसी संस्था के प्रभावी कार्यशील होने के लिए लगातार मजबूत किया जाना आवश्यक है।

13.3.1 गुणवत्ता नियंत्रण एवं सेवा प्रबन्धन

गुणवत्ता, हालाँकि एक भटकाने वाली अवधारणा है। इसको परिभाषित करने की आवश्यकता है, इसके संकेतक विकसित करना है, प्रक्रियाओं की रूपरेखा निश्चित करना है, और किसी भी गतिविधि के निवेश, प्रक्रिया और उत्पादन चरणों में शामिल सभी लोगों द्वारा की गई क्रियाओं को नियंत्रित किया जाना है। किसी उद्देश्य के लिए उत्पाद की उपयुक्तता, इसकी गुणवत्ता को संदर्भित करती है (गुरी, 1987)। होल्ट (1990) के अनुसार, गुणवत्ता, औद्योगिक शब्दों में, त्रुटिमुक्त, पूरी तरह से विश्वसनीय उत्पाद और सेवाएँ, या ग्राहक किसी उत्पाद की गुणवत्ता को मापते हैं कि यह किसी निश्चित समय पर उनकी अपेक्षाओं को कैसे पूरा करती है। ये परिभाषाएँ, अच्छी गुणवत्ता अधिगम के लिए महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं या गतिविधियों को समझने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती हैं। अवब्रथ (2013) के अनुसार, मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम की ''गुणवत्ता'' का निर्णय अधिगम की सामग्री के संदर्भ में किया जाता है; जो ऐसी धुरी है जिस पर संपूर्ण अधिगम उद्यम बदल जाता है। हालाँकि, एक पाठ्यक्रम, सिर्फ सामग्री से ज्यादा, यह शिक्षार्थी के अनुभव की संपूर्णता भी है। क्योंकि, यह मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम प्रदान करने वाले का उद्देश्य अधिगम की स्थितियों का निर्माण करना है, इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि पाठ्यक्रम उत्पादन, वितरण और विद्यार्थी सहायता प्रणाली कितनी अच्छी तरह काम करती है, और परिचालन शर्तों में ये सभी कितनी अच्छी तरह से एकीकृत होते हैं। उत्कृष्ट सामग्री बेकार है, यदि विद्यार्थियों को वितरित न हों, घटिया/खराब/तुच्छ सामग्री का समय पर वितरित होने पर भी सीमित मूल्य है। उत्पादों के निर्माण और सेवाओं के प्रावधान को आगे बढ़ाने के लिए ऐसी प्रक्रियाएँ और संचालन हैं जो जब तक विफल नहीं होते हैं, वे दिखाई नहीं देते हैं। योग्य होने की तुलना में, उन्हें कम ध्यान दिया जाता है और मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार लाने के ध्यान के लिए एक प्रमुख क्षेत्र है। इसलिए, गुणवत्ता नियंत्रण महत्वपूर्ण है, जोकि गुरी (1987) के अनुसार, "मुख्य रूप से एक ऐसी क्रिया है जो कार्यों को पूर्व निर्धारित मानकों पर समायोजित करती है।" गुणवत्ता नियंत्रण और गुणवत्ता सुनिश्चयन तंत्रशीलता, संगठनात्मक प्रभाव और प्रदर्शन में योगदान करते हैं, लेकिन इसका पता, सभी हितधारकों, अधिकारियों, संकाय सदस्यों और अन्य कर्मचारियों, विद्यार्थियों, माता-पिता, सरकार और अन्य निधिकरण संस्थाओं, नियोजकों/नियोक्ताओं और बड़े पैमाने पर जनता के दृष्टिकोणों से लगाने की आवश्यकता है। सभी उप-प्रणालियों के लिए निष्पादन संकेतक विकसित किए जा सकते हैं और उन सभी लोगों द्वारा अनुपालन किया जाए, ताकि दिए गए निष्पादन के स्तर को प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत जिम्मेदारी को पूरा किया जा सके। हालाँकि, यह महसूस किया जा सकता है कि ये संकेतक गुणवत्ता के मुद्दे को पूरी तरह समझा/स्पष्ट नहीं कर सकते। कुछ गुणात्मक पहलुओं को पदाधिकारियों/कार्यकर्त्ताओं के निरंतर व्यावसायिक विकास और अनुभवात्मक अधिगम के माध्यम से संभालने की आवश्यकता है; और वास्तव में गुणवत्ता का स्तर व्यावसायिकता के स्तर, और दूरस्थ शिक्षण में लगे मानव संसाधनों पर निर्भर करता है। प्रमुख विचार अधिगम सामग्रियों की गुणवत्ता से और विद्यार्थियों को पेश की गई सहायक सेवाओं जैसे जानकारी, सामग्री प्रेषण, परामर्श,

परीक्षा इत्यादि से सम्बन्धित हैं। सरल विपणन दृष्टिकोण पूरी तरह से स्थिति का सामना करने में मदद नहीं कर सकता है क्योंकि अपने ग्राहकों तक पहुँचने में प्रदाताओं/कार्यकत्ताओं की पूर्ण प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है।

13.3.2 उत्तरदायित्व

एक बार कार्य आवंटित किए जाते हैं और जिम्मेदारी तय हो जाती है, प्रक्रिया की निरंतर निगरानी करना आवश्यक हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी को दिए गए कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली, निरंतर संचार और प्रतिबद्धता के साथ, प्रणाली में और उसके कार्यकरण में अधिक विश्वास को विकसित करने में योगदान (विचलित होने की बजाय) देते हैं। आमने-सामने शिक्षण के विपरीत, जहाँ अध्यापक शिक्षण के लिए पूरी तरह जिम्मेदार हैं, दूरस्थ शिक्षा में समूह/टीम का काम शामिल है। प्रत्येक व्यक्ति का योगदान प्रणाली की सफलता और इसकी प्रक्रियाओं के लिए महत्वपूर्ण है। स्वायत्तता – प्रशासनिक, शैक्षिक और वित्तीय – तथा उत्तरदायित्व के बीच उचित संतुलन के साथ किसी भी प्रणाली के कार्य संचालन से अधिक लाभ लेने की अपेक्षा कर सकते हैं।

13.3.3 तकनीकी नवाचारों का प्रबन्धन

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा, देर से, वितरण और अन्योन्यक्रिया/पारस्परिक क्रिया की प्रौद्योगिकियों पर निर्भर हो चुकी है। तकनीकियों का प्रयोग सामग्रियों के विकास में हो सकता है, लेकिन बड़े पैमाने पर संचार और सूचना प्रौद्योगिकियों जैसे दृश्य, श्रव्य, रेडियो, टेलीविजन, टेलीकांफ्रेंसिंग, इंटरनेट, वेब कॉफ्रेंसिंग सभी का उपयोग अधिगम के वितरण के लिए किया जाता है जिसे अब "वितरित शिक्षा" कहा जाता है। प्रौद्योगिकियों जैसे कम्प्यूटर (और इंटरनेट) प्रणाली के संचालन, सूचना भंडारण और प्रसार और अधिगम पैकेजों के विकास में शामिल हैं। ऐसी प्रणाली का रखरखाव मुश्किल है और साथ ही मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा उप प्रणाली के संचालन की सफलता के लिए भी महत्वपूर्ण है। इसके साथ, प्रौद्योगिकियों जैसे टेलीकांफ्रेंसिंग और संवादात्मक रेडियो परामर्श में बड़े नेटवर्क शामिल हो सकते हैं जिन्हें बनाए रखना या रखरखाव और प्रबंधित किया जाना चाहिए। इसलिए, उपयुक्त प्रौद्योगिकियों का विकल्प, भविष्य के तकनीकी विकास के साथ उनकी अनुकूलता, तकनीकी नवाचारों के प्रबन्धन में महत्वपूर्ण है। अंततः, सफलता का माप यह निर्धारित करने में निहित है कि क्या तकनीकि वस्तुएँ अधिक प्रभावी ढंग से करने में और विद्यार्थियों द्वारा प्रभावी और सक्रिय अधिगम को सुगम बनाने में सहायता कर रही हैं।

13.3.4 विपणन

दूरस्थ शिक्षा संस्थान या मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान लगातार अपने उत्पादों, सेवाओं और ब्रांड के विपणन में व्यस्त हैं। दूरस्थ शिक्षा, विशेष रूप से व्यावसायिक क्षेत्रों में और व्यावसायिक विकास जारी रखने के लिए संभावित ग्राहकों के लिए पेश किए गए कार्यक्रमों में गुणवत्ता, उपयुक्तता और लचीलापन सुनिश्चित करने के लिए अधिक प्रतिस्पर्धी बन गए हैं। गुणवत्ता सुनिश्चयन और समुचित रूप से मान्यता प्रस्तुत किए जाने वाले मुद्दे बन गए हैं। मुख्यतः

i) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विपणन करने की आवश्यकता है (यदि कोई इसकी गुणवत्ता से इन-हाउस आश्वस्त हो); और

ii) किसी के दृष्टिकोण में व्यवसायी होने के लिए सेवा की गुणवत्ता को बढ़ाने की आवश्यकता है।

13.3.5 संजाल/प्रसार

संजाल/प्रसार, नेटवर्किंग और सहयोग दूरस्थ शिक्षण संस्थानों या मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की प्रभावी कार्य पद्धति के लिए महत्वपूर्ण हैं।। नेटवर्किंग (प्रसार) में शामिल हैं, संगठन के भीतर नेटवर्किंग, संपूर्ण विश्व में तकनीकी नेटवर्किंग (वास्तविक नेटवर्किंग सहित), विकास के लिए मानव नेटवर्किंग और उपयुक्त स्वयं-अध्ययन के पैकेज के साथ-साथ विद्यार्थियों के लिए उनका प्रभावी वितरण, संसाधन नेटवर्किंग और सहयोग जो प्रभावकारिता को बढ़ाने के लिए और लागत को कम करने के लिए हो सकते हैं। ऐसे नेटवर्क सहयोगी संस्थानों के बीच क्रेडिट स्थानांतरण, संयुक्त डिग्री कार्यक्रमों और शिक्षण-अधिगम संसाधनों का संयुक्त विकास और साझा करने का नेतृत्व करते हैं। संजाल/प्रसार, नेटवर्किंग और इनसे जुड़ी प्रक्रियाओं को ध्यानपूर्वक प्रबंधित करने की आवश्यकता है क्योंकि यह सावधानी के साथ संभाला जाने वाला एक बहुत संवेदनशील क्षेत्र है।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

1) दूरस्थ शिक्षा में विपणन सेवाओं के सुधार और उचित प्रबन्धन पर अपने विचार लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

13.4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था प्रबन्धन : विभिन्न प्रतिमान

दूरस्थ शिक्षण संस्थानों या मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की संरचना को अलग-अलग तरीकों से वर्णित किया गया है। आइए, कुछ प्रतिमानों को देखें जो प्रबन्धन संरचना या मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की प्रणाली से प्रासंगिकता/संबद्धता रखते हैं।

13.4.1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के प्रतिमान/व्यवस्थाएँ

आइए, सबसे पहले हम, दूरस्थ शिक्षा के तीन प्रकार के प्रबन्धन प्रतिमानों – संस्था-केन्द्रित, व्यक्ति-केन्द्रित, और समाज-आधारित प्रतिमान जो रंबल (1986) द्वारा वर्णित किए गए हैं, पर ध्यान केन्द्रित करते हैं।

- **संस्था-केन्द्रित प्रतिमान** में शिक्षा के व्यवस्थित प्रतिमान की प्रबलता है, अर्थात प्रणाली को और अधिक कुशल और किफायती बनाने के लिए प्रत्येक प्रयास किए जाते हैं। सभी कार्यकर्त्ताओं को महत्वपूर्ण कार्य सौंपे जाते हैं जो कि जबावदेही और व्यक्तिगत जिम्मेदारी; और शैक्षिक संगठन के लिए पाठ्यक्रम सामग्रियों को विकसित करने वाले सलाहकार के रूप में कार्य करते हैं (उदाहरण, यू.के.ओ.यू.; इग्नू)।

- **व्यक्ति-केन्द्रित प्रतिमान** में, सेवा के लिए विद्यार्थी एक प्रमुख व्यक्ति है, और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम अधिक व्यक्तिगत और पराक्रम्य है। अनुशिक्षक/सलाहकार व्यक्तिगत रूप से व्यक्तिगत विद्यार्थियों के अधिगम का पराक्रम्य और अनुवर्तन करते हैं। (अथबास्का मुक्त विश्वविद्यालय, कनाडा)।

- **समाज आधारित प्रतिमानों** में, दूरस्थ शिक्षा सामग्रियों का इस्तेमाल एक समुदाय की स्थिति में किया जाता है जहाँ एक अध्यापक, इन सामग्रियों के माध्यम से उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समुदाय के सभी सदस्यों को शामिल करता है। अध्यापक, अधिगम के लक्ष्यों, अधिगम की विषयवस्तु, अधिगम सामग्री और मूल्यांकन की कार्यविधि/तंत्र को पहचानने में सहायता करने के लिए एक सुविधाकर्त्ता के रूप में कार्य करता है। (उदाहरण के लिए, कृषि विस्तार कार्यक्रम, पॉलो फ्रेयर का दमनकारी शिक्षाशास्त्र)।

फ्रीमैन (1997) ने छः प्रकार की मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणालियों की पहचान की है जो कि चरों के दो समूहों में आधारित हैं : (i) क्या संस्थान परिसर-आधारित है, या संगठन-आधारित है, या व्यक्तिगत-आधारित, और (ii) क्या यह गतिमान या स्वयं–गतिमान है।

प्रत्येक समूह से एक चर के संयोजन से गठित छह प्रकार की मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणालियाँ (तीन गुणा दो) निम्नानुसार हैं :

- *गति परिसर-आधारित* मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली एक औपचारिक प्रणाली की सभी आवश्यकताओं को पूरा करती है, अर्थात् सेमेस्टर, व्याख्यान, समय-सारणी आदि, लेकिन एक ही समय में अधिगम में व्यक्तिगत जिम्मेदारी प्रदान करती है।

- *गति संगठन-आधारित प्रणाली* में, प्रशिक्षण या सतत् शिक्षा की आवश्यकता तब होती है जब हाथ में काम की इतनी माँग होती है, बजाय जब कर्मचारियों को इसकी आवश्यकता है। कंपनी में, लचीली अधिगम योजनाएँ इस प्रकार की मुक्त शिक्षा का प्रतिनिधित्व करती हैं।

- मुक्त विश्वविद्यालय, मुक्त अधिगम के *गति-व्यक्तिगत-आधारित प्रणाली* का प्रतिनिधित्व करते हैं, क्योंकि वे सभी शिक्षण-अधिगम सामग्री और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, जो संगठन की तैयारियों की गति पर आधारित होते हैं, बजाय इसके जब विद्यार्थियों की उनकी आवश्यकता होती है। वहाँ सामग्रियों के प्रेषण, सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करने और परीक्षाओं का संचालन के लिए समय सीमाए हैं। विद्यार्थियों को उस अनुसूची का पालन करना होगा यदि वह उस सेमेस्टर/सत्र/अवधि में शैक्षिक कार्यक्रम को पूरा करना चाहें।

- स्वयं-गति परिसर-आधारित प्रणाली में अध्यापक-विद्यार्थी संपर्क और पारस्परिक क्रिया बहुत अधिक होती हैं। अनुशिक्षण और मूल्यांकन दोनों व्यक्तिगत विद्यार्थियों की जरूरतों पर आधारित है। विद्यार्थियों के बीच परस्पर अंतःक्रिया की भी संभावना है।

- *आत्म-गति संगठन-आधारित प्रणाली* में, अध्यापक या अनुशिक्षक का स्थान पंक्ति प्रबन्धन ले लेते हैं, और बजाय कक्षा में होने के विद्यार्थियों में अधिगम होता है, जब वे सभी काम कर रहे होते हैं।

- पुराने पत्राचार पाठ्यक्रम, *आत्म-गति व्यक्तिगत-आधारित* मुक्त शिक्षा प्रणाली के सबसे अच्छे उदाहरण का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो अपनी गति के आधार पर विद्यार्थियों को आगे बढ़ने के लिए संस्थान में पर्याप्त लचीनेपन की अनुमति दी गई है। हालाँकि, यह लचीलापन संगठनात्मक कठिनाइयाँ बन गयी हैं, क्योंकि विद्यार्थी अधिगम क्रम के विभिन्न बिन्दुओं पर है और शायद ही अध्यापक-विद्यार्थी में सपंर्क हैं।

ऊपर वर्णित प्रणाली के प्रकारों के बावजूद, एक दूरस्थ शिक्षण संस्थान या मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान पर मुख्यालय, क्षेत्रीय केन्द्रों और अध्ययन केन्द्रों (या कार्यक्रम केन्द्रों/कार्य केन्द्रों आदि) के एक संगठनात्मक नेटवर्क/प्रसार के भीतर काम करते हैं। जबकि कार्यक्रम विकास गतिविधियों का मुख्यालय द्वारा काफी ध्यान रखा जाता है, कार्यक्रम क्रियान्वयन की गतिविधियाँ, मुख्यालय के कुछ विभाग/इकाई द्वारा केन्द्रीकृत समन्वय के साथ क्षेत्रीय और अध्ययन केन्द्रों की जिम्मेदारी होती है। मुख्यालय के भीतर, कई विद्यापीठ या अध्ययन विभाग हैं जो कार्यक्रम विकास गतिविधियों में शामिल हैं। सहायता विभाग, प्रवेश, सामग्री मुद्रण और वितरण, क्षेत्रीय सेवाएँ, मूल्यांकन, मीडिया उत्पादन, स्टॉफ प्रशिक्षण, अनुसंधान, मूल्यांकन और ऐसे कई कार्य जो कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में शामिल हैं, का प्रबंधन/संचालन करते हैं। इकाइयाँ जैसे कि सामान्य प्रशासन और अर्थव्यवस्था उपरोक्त सभी गतिविधियों का समर्थन करते हैं। जबकि सामग्री संरचना और विकास का अध्यापकों/शैक्षणिक कर्मियों द्वारा ध्यान रखा जाता है, अन्य सम्बन्धित गतिविधियों का ध्यान सम्बन्धित इकाइयों में अन्य कर्मचारियों द्वारा रखा जाता है। इसके लिए एक अच्छी तरह से संगठित और समन्वित पारस्परिक क्रिया और विभिन्न इकाइयों के निरीक्षण की एक प्रणाली की आवश्यकता है। तभी संगठन प्रभावी ढंग से कार्य कर सकता है, और इसके विद्यार्थियों की अधिकतम संतुष्टि प्रदान कर सकता है। आप यहाँ देख सकते हैं कि संस्थागत संरचना इसके प्रबन्धन पर प्रभाव डालती है।

मुक्त शिक्षा प्रणाली में, ज्यादातर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के दो प्रतिमानों से अवगत होते हैं, जैसे एकल प्रणाली दूरस्थ शिक्षा संस्थान और दोहरी प्रणाली दूरस्थ शिक्षा संस्थान। बेशक, देर से दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के संघ/कंसोर्टियम प्रतिमान के प्रारंभ के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा संस्थानों का तीसरा प्रतिमान उभरा है। इनमें से प्रत्येक प्रकार को संक्षेप में नीचे समझाया गया है।

एकल प्रणाली स्वायत्त दूरस्थ शिक्षा संस्थानों को दर्शाती है जैसे मुक्त विश्वविद्यालय या मुक्त विद्यालय। इस तरह के संस्थान केवल दूरस्थ विद्यार्थियों के लिए दूरस्थ शिक्षण गतिविधियों के संगठन पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। इन संस्थानों में ऑन-कैंपस नियमित विद्यार्थी नहीं होते हैं।

द्वैध प्रणाली दूरस्थ शिक्षा संस्थान संकेत करते हैं कि संस्था आमने-सामने वाले नियमित कार्यक्रमों, साथ ही दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। भारत में पारंपरिक विश्वविद्यालय, परिसर-आधारित पाठ्यक्रमों और साथ ही पत्राचार पाठ्यक्रमों का आयोजन करते हैं। बेशक, पत्राचार पाठ्यक्रम (पाठ्यक्रमों) पत्राचार कार्यक्रमों के संस्थानों द्वारा आयोजित किए जाते हैं, जो इन विश्वविद्यालयों की दूरस्थ शिक्षा निदेशालयों के प्रसंकेतक हैं। एकल प्रणाली मुक्त विश्वविद्यालयों के विपरीत, पारंपरिक विश्वविद्यालयों के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों की पाठ्यक्रम विकास और परीक्षा के मामलों में आमने-सामने की प्रणाली के नियंत्रण में रहते हैं।

संघ/कंसोर्टियम प्रतिमान एक उभरती हुई अवधारणा है। इसका उद्देश्य विभिन्न प्रकार के संस्थानों के संसाधनों को श्रेष्ठ स्तर तक साझा करना है जो एक संघ/कंसोर्टियम के तहत दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। इग्नू के पूर्ववर्ती दूरस्थ शिक्षा परिषद, उदाहरण के लिए, भारत स्तर पर मुक्त विश्वविद्यालयों के संघ/कंसोर्टियम की स्थापना और कार्यों को सुविधाजनक बना दिया था। अधिगम की राष्ट्रमंडल देशों के स्तर पर समान बात का एक उदाहरण है। अब, देश, क्षेत्रीय और महाद्वीप के स्तर पर बहुत से संघ/कंसोर्टियम मौजूद हैं।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

2) निम्नलिखित की सूची बनाएँ

क) रंबल द्वारा वर्णित, दूरस्थ शिक्षा के तीन प्रकारों के प्रबन्धन प्रतिमान

.....

.....

.....

.....

.....

ख) फ्रीमैन द्वारा पहचाने गए छह प्रकार की मुक्त शिक्षा प्रणालियाँ क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

13.4.2 एकल एवं द्वैध प्रणाली वाले संस्थानों की तुलना

एकल एवं द्वैध (दोहरी) प्रणाली वाले संस्थानों की तुलना विभिन्न मापदण्डों पर की जा सकती है जैसे संस्थाओं की प्रकृति, मुक्त शिक्षा की अवधारणा, प्रवेश नीतियाँ, पाठ्यक्रमों की प्रकृति, कार्यक्रम के उद्देश्य, पाठ्यक्रम संरचना/सामग्री, विधियाँ और मीडिया, अवधि, मूल्यांकन प्रक्रिया, विद्यार्थी समर्थन प्रणाली और कार्यक्रम का परिणाम।

i) **संस्थानों की प्रकृति :** एकल प्रणाली वाले संस्थान जैसे मुक्त विश्वविद्यालय/मुक्त विद्यालय, शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों के आयोजन के एकमात्र उद्देश्य के साथ स्वायत्त हैं। ये संस्थान, दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए डिग्री, डिप्लोमा (मुक्त विश्वविद्यालय) और प्रमाणपत्र (मुक्त विद्यालय) देते हैं। दोहरी प्रणाली व्यवस्था का मुख्य लक्ष्य आमने-सामने वाले नियमित पाठ्यक्रम गतिविधियों का आयोजन करना है। उनके पास दूरस्थ विद्यार्थियों के लिए निर्देशों के माध्यमिक चैनल के रूप में पत्राचार शिक्षा कार्यक्रम होते हैं। परिसर-आधारित कार्यक्रम पत्राचार शिक्षा

कार्यक्रमों के लिए शर्तें निर्धारित करते हैं। दोनों कार्यक्रमों के विद्यार्थियों को पारंपरिक विश्वविद्यालय के द्वारा डिग्री/डिप्लोमा/प्रमाणपत्र प्रदान किए जाते हैं। मुक्त विश्वविद्यालयों के विपरीत, पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थान या दूरस्थ शिक्षा निदेशालय स्वायत्त नहीं हैं। उनके कार्यक्रमों को पारंपरिक विश्वविद्यालय नियंत्रित करते हैं।

ii) **मुक्त शिक्षा की अवधारणा** : एकल प्रणाली वाले दूरस्थ शिक्षा संस्थानों का उद्देश्य एक मुक्त शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना है। दूसरे शब्दों में, शिक्षा में खुलापन दूरस्थ शिक्षा संस्थानों का आदर्शोक्ति है जैसे इग्नू, राज्य मुक्त विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय (NOS)/राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान (NIOS)। खुलापन, विभिन्न विकल्पों में से विशिष्ट पाठ्यक्रम/पाठ्यक्रमों को चुनने में, अपने अधिगम की योजना में क्रियाएँ, अधिगम परियोजनाओं का चयन, सीखने के स्थान और समय को चुनने में, परामर्शदाताओं और मार्गदर्शकों से परामर्श करने की स्वतंत्रता, स्वयं-निर्देशित सामग्रियों द्वारा अधिगम, स्वयं-मूल्यांकन में संलग्न, एक अधिगम गतिविधि या एक पाठ्यक्रम या कार्यक्रम को पूरा करने के लिए गति के निर्णय में विद्यार्थियों की स्वायत्तता को देखा जा सकता है।

इसके विपरीत, दोहरी प्रणाली वाले संस्थान, पारंपरिक विश्वविद्यालय कार्यक्रमों के अधीनस्थ और सहायक के रूप में काम करते हैं। मुक्त विश्वविद्यालयों के विपरीत, इन संस्थानों में से और इनके पाठ्यक्रमों में खुलापन सीमित है। स्वायत्तता पत्राचार पाठ्य भाग और अन्य सामग्रियों के माध्यम से उनकी स्वयं की अधिगम गतिविधियों की योजना बनाने तक सीमित है। आपको निम्नलिखित पृष्ठों में इन आयामों पर एक विस्तृत चर्चा मिलेगी।

iii) **प्रवेश नीतियाँ :** एकल प्रणाली वाले संस्थान, मुक्त प्रवेश नीतियों में विश्वास रखते हैं। उनका अधिकार क्षेत्र व्यापक है। विभिन्न कार्यक्रमों के लिए प्रवेश के मापदंड मुख्य रूप से अनुभव-आधारित हैं। वे पिछली शैक्षणिक योग्यताओं, आयु, अधिवास आदि पर ज्यादा बल नहीं देते हैं। एक विशिष्ट आयु के बाद अनुभव के साथ एक वयस्क उम्मीदवार विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए पात्र माने जाते हैं। बेशक, पात्रता मापदंड/मानदंड, कार्यक्रम से कार्यक्रम अलग-अलग हो सकते हैं इसलिए खुलेपन की सीमा भी तदनुसार बदलती है।

दोहरी प्रणाली वाले संस्थान भी लचीली प्रवेश नीतियों पर केन्द्रित हैं। लेकिन, एकल प्रणाली वाले संस्थानों के विपरीत जिनका विशिष्ट राज्य (राज्य मुक्त विश्वविद्यालय) पर अधिकार क्षेत्र है या पूरा देश (इग्नू के मामले में), पत्राचार शिक्षा कार्यक्रम, मूल विद्यालय के अधिकार क्षेत्र तक सीमित हो सकते हैं। शायद ही, कुछ विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों के प्रस्तार के आधार पर अधिकार क्षेत्र का विस्तार करते हैं।

एक बड़ी संख्या में विश्वविद्यालयों में, पत्राचार या दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम में प्रवेश करने के लिए पात्रता मानदंड, नियमित पाठ्यक्रम/पाठ्यक्रमों में प्रवेश के समान है। कुछ मामलों में, कुछ पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए वे अंकों की प्रतिशतता की न्यूनतम आवश्यकता को कम करते हैं, जैसे दिल्ली विश्वविद्यालय, अन्नामलाई विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय। कुछ मामलों में, मुक्त प्रवेश के प्रावधान हैं जैसे आंध्र विश्वविद्यालय, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय और अन्नामलाई विश्वविद्यालय। कुछ पाठ्यक्रम/कार्यक्रमों के लिए, ये विश्वविद्यालयों विद्यार्थियों की आयु के आधार पर खुलेपन को प्रोत्साहित करते हैं, उदाहरण के लिए, 21 साल से अधिक उम्र के किसी भी व्यक्ति किसी भी अध्ययन के किसी कार्यक्रम को ले सकते हैं।

iv) **पाठ्यक्रमों की प्रकृति** : मुक्त विश्वविद्यालय डिग्री, डिप्लोमा और प्रमाणपत्र के लिए अग्रणी, विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों को आरंभ करने के लिए अपना निर्णय लेते हैं। उनका प्रमुख बल, नवीन, जरूरत-आधारित, निरंतर शिक्षा, क्षमता निर्माण, कौशल विकास प्रकृति के कार्यक्रमों की शुरुआत पर है। निश्चित रूप से, मुक्त विश्वविद्यालयों के कुछ कार्यक्रम पारंपरिक प्रकार के भी हैं। उनके नवाचार क्रेडिट प्रणाली, बहु-प्रविष्टि प्रणाली, एक कार्यक्रम के तहत विभिन्न पाठ्यक्रम तथा कुछ पाठ्यक्रम एक से अधिक कार्यक्रमों के तहत् और एक कार्यक्रम को पूरा करने के लिए आवश्यक क्रेडिट प्राप्त करने के लिए किसी भी पाठ्यक्रम का चयन करने की स्वतंत्रता से सम्बन्धित है। वे एक बड़ी संख्या में अंतःविषयीकार्यक्रम और साथ ही विषय-उन्मुख कार्यक्रम को आरंभ करते हैं। उदाहरण के लिए, इग्नू, डॉ. भीमराव अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय, कोटा मुक्त विश्वविद्यालय और अन्य व्यवसायी, तकनीकी, व्यावसायिक और सामान्य कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। यह मुक्त विश्वविद्यालय (एकल प्रणाली) व्यवस्था की स्वायत्तता है जो इस तरह के कार्यक्रम की शुरुआत को सक्षम बनाती है।

दोहरी प्रणाली वाले संस्थानों के मामले में, यह बड़ी संख्या में देखा गया है कि पत्राचार पाठ्यक्रमों द्वारा सामान्य शिक्षा कार्यक्रमों की प्रस्तुति की जाती है। ये संस्थान किसी भी कार्यक्रम के तहत, वैकल्पिक पाठ्यक्रमों को चुनने के लिए, विद्यार्थियों को थोड़ा-सा विकल्प देते हैं। इसलिए, वे नियमित पाठ्यक्रम की तरह जटिल हैं। इन संस्थानों में क्रेडिट प्रणाली, मुश्किल से अपनाई गई है।

v) **कार्यक्रमों के उद्देश्य** : एकल प्रणाली वाले दूरस्थ शिक्षा संस्थान, सभी प्रकार के विद्यार्थियों के लिए शैक्षणिक अवसरों का विस्तार करते हैं जो प्रेरित हैं और स्वयं सीखने के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने के लिए पर्याप्त सक्षम हैं। आदर्श रूप से वे विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और जरूरतों पर ध्यान देते हैं जिन्हें पाठ्यक्रम के उद्देश्यों से जोड़ा जाता है। विषय विशेषज्ञों और अधिकारियों का भरोसा पाठ्यक्रम के उद्देश्यों के निर्माण पर अंतिम निर्णय है। दोहरी प्रणाली वाले दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में विषय विशेषज्ञों और अधिकारियों का कार्यक्रम/पाठ्यक्रमों के उद्देश्यों को तय करने में ज्यादा हस्तक्षेप नहीं होता है। एकल प्रणाली वाले संस्थानों में, उन क्षेत्रों में पाठ्यक्रम का प्रमोचन करना संभव है जो दोहरी प्रणाली वाले संस्थानों में नहीं होते हैं। समुदाय विकास, और कृषि श्रमिकों, किसानों, महिलाओं, विकलांग लोगों, चमड़े का काम करने वाले, निर्माण कार्यकर्ता आदि के कौशल विकास के लिए पाठ्यक्रम/कार्यक्रम पहले से ही प्रारंभ किए जा चुके हैं (उदाहरण के लिए, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय और इग्नू)। विश्वविद्यालय शिक्षा का विस्तारित आयाम, एकल प्रणाली वाले मुक्त विश्वविद्यालय व्यवस्था में ज्यादा ध्यान का मामला है। परंतु दोहरी प्रणाली वाले संस्थानों में ऐसा नहीं है।

vi) **पाठ्यक्रम संरचना/सामग्री** : एकल प्रणाली वाले संस्थान (मुक्त विश्वविद्यालय) विद्यार्थी-आधारित पाठ्यक्रमों पर केन्द्रित करते हैं। कार्यक्रम और पाठ्यक्रम के लिए मॉड्यूलर-उपागम, आवश्यकता-आधारित पाठ्यक्रम विकसित करने के लिए उपयोगी हैं। मॉड्यूल (मापंक) (खंड, पाठ्यक्रम आदि) पाठ्यक्रमों या लक्ष्य समूहों की आवश्यकताओं के अनुसार आसानी से कई अलग-अलग संयोजनों में इकट्ठा किया जा सकता है। विद्यार्थी को, विभिन्न स्रोतों से तैयार की जाने वाली सामग्री का उपयोग करने के लिए अवसर दिए जाने चाहिए। व्यक्तिगत विद्यार्थी, अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने वाले विभिन्न मॉडयूल का चयन कर सकता है। तथ्यात्मक और शैक्षिक कार्यक्रम के

साथ अनुभव-आधारित और प्रायोगिक-आधारित कार्यक्रमों पर अधिक जोर दिया गया है। भारतीय अनुभव बताते हैं कि मुक्त विश्वविद्यालयों में दूरस्थ शिक्षा विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप, विशेष रूप से विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले विद्यार्थियों के लिए, क्रेडिट-आधारित पाठ्यक्रमों को प्रोत्साहित किया है। पाठ्यक्रमों के चयन के लिए अध्ययन क्षेत्रों में परामर्श प्रावधान उपलब्ध कराया जाता है।

दोहरी प्रणाली वाले कार्यक्रम केवल दूरस्थ प्रणाली के माध्यम से नियमित पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति की तरह है। वे ज्यादातर शैक्षणिक और ज्ञान-उन्मुख हैं। विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम विषय-वस्तु के साथ अपने अनुभव जोड़ने के लिए सीमित अवसर हैं।

vii) **विधियाँ और मीडिया :** मुक्त विश्वविद्यालय व्यवस्था कई विधियों और संचार माध्यमों को महत्व देती है। वैकल्पिक या अनुपूरक मल्टी-मीडिया पैकेजे सहित मुद्रण-आधारित और इलैक्ट्रानिक मीडिया-आधारित निविष्टयाँ अनुदेशात्मक प्रणाली का आधार होती हैं। उन्नत प्रौद्योगिकी-आधारित सुविधाएँ भी विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध हैं। विद्यार्थी अपनी आवश्यकताओं, अपेक्षाओं, सुविधाओं और बाधाओं के अनुसार उपयुक्त विधियों/तरीकों और संचार माध्यमों का चयन करने के लिए स्वायत्तता का आनंद लेते हैं। भारत में, मुक्त विश्वविद्यालय, स्वयं-शिक्षण पैकेज को मुद्रण माध्यमों, इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों और अध्यापक-विद्यार्थी के बीच पारस्परिक क्रिया के लिए अवसर प्रदान करने वाले आमने-सामने या टेलीकांफ्रेंसिंग सत्र के माध्यम से शामिल करने के गंभीर प्रयास करते हैं। कुछ इग्नू कार्यक्रम (उदाहरण के लिए, कम्प्यूटर कार्यक्रम) भी ऑनलाइन उपलब्ध हैं।

पत्राचार शिक्षा कार्यक्रमों में मुद्रण-आधारित सामग्रियों, जो स्वयं-शिक्षण प्रतिमान का अनुकरण नहीं करते, पर बल देते हैं। पत्राचार पाठ्यक्रमों में मल्टी-मीडिया सुविधाओं का उपयोग करने का दायरा, मुक्त विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम के विपरीत, सीमित है। बेशक, सभी पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थान संपर्क कार्यक्रमों पर जोर देते हैं। वे व्यावसायिक और कौशल-आधारित कार्यक्रमों के लिए अनिवार्य हैं जबकि पत्राचार पाठ्यक्रमों के सामान्य पाठ्यक्रमों के लिए उपस्थिति वैकल्पिक है।

viii) **पाठ्यक्रम की अवधि :** एकल प्रणाली वाले संस्थानों में, लम्बे समय तक कार्यक्रम पूरा करने के लिए प्रावधान हैं। एक वर्ष के कार्यक्रम को पूरा करने की अवधि 2 सेमेस्टर (1 वर्ष) से 8 सेमेस्टर (4 वर्ष) की हो सकती है। उदाहरण के लिए, इग्नू के बी.ए., बी. एस.सी. और बी.कॉम कार्यक्रम, कम से कम 3 साल या अधिकतम 6 साल (जो कि पहले 8 साल था) में पूरे किए जा सकते हैं। मुक्त विश्वविद्यालयों के विपरीत, दोहरी प्रणाली व्यवस्था में पाठ्यक्रम अवधि मूल विश्वविद्यालयों के नियमित कार्यक्रमों के प्रतिरूप के समान होती है; दूरस्थ शिक्षा की पाठ्यक्रम अवधि का लचीलापन नियमित पाठ्यक्रम प्रणाली पर निर्भर करता है।

ix) **मूल्यांकन प्रक्रिया :** निरंतर मूल्यांकन आमतौर पर दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों की शिक्षण प्रक्रिया के साथ एकीकृत किया जाता है। मुक्त विश्वविद्यालय प्रणाली, अनुदेशात्मक पैकेज के माध्यम से विद्यार्थियों के आत्म-मूल्यांकन के लिए, सत्रीय कार्य के माध्यम से विद्यार्थियों की प्रगति के नियतकालिक मूल्यांकन के लिए, समूह अधिगम में साथियों/समकक्ष व्यक्तियों के मूल्यांकन के लिए और पाठ्यक्रम के अंत में मूल्यांकन के लिए सुविधाएँ सम्मिलित करती हैं। क्रेडिट-आधारित पाठ्यक्रमों में, विद्यार्थियों को उनकी तैयारी के आधार पर, अपनी गति से परीक्षा देने की स्वतंत्रता है। विद्यार्थी कार्यक्रम/पाठ्यक्रम को क्रेडिट के आधार पर पूरा कर सकता है।

दोहरी प्रणाली वाली दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था, विद्यार्थियों की प्रगति के आँकलन के लिए नियत कार्य प्रणाली को अपनाती है। विद्यार्थियों के स्व-मूल्यांकन की कम संभावना होती है। पाठ्यक्रम के अंत का मूल्यांकन नियमित पाठ्यक्रम प्रणाली द्वारा निर्धारित किया जाता है। भारत में पत्राचार और दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम चलाने वाले अधिकांश विश्वविद्यालय, परिसर-आधारित और दूरस्थ शिक्षा वर्ग, दोनों के लिए समान (एक तरह का) परीक्षा कार्यक्रम और प्रश्नपत्र का उपयोग करते हैं।

x) **विद्यार्थी सहायता सेवाएँ** : एकल प्रणाली वाली दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। मुक्त विश्वविद्यालयों ने विद्यार्थियों को सहायता सेवाओं के आयोजन के लिए संगठनात्मक ढाँचा बनाया है। क्षेत्रीय सेवा प्रभाग या विद्यार्थी सहायता इकाई, क्षेत्रीय केन्द्रों और अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से इस तरह की गतिविधियों को देखते हैं। नियमित परामर्श कार्यक्रम, व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम, विस्तारित संपर्क कार्यक्रम, रेडियो प्रसारण और टेलीविजन प्रसारण सुविधाएँ, टेलीकांफ्रेंसिंग सुविधाएँ, पुस्तकालय अध्ययन और प्रयोगात्मक या व्यावहारिक कार्य सुविधाएं विद्यार्थी सहायता सेवा गतिविधियों के प्रमुख घटक हैं। ऐसी सुविधाएँ, दोहरी व्यवस्था वाले संस्थानों के मामले में सीमित हैं। अध्ययन केन्द्रों में पुस्तकालय सुविधाएँ और मार्गदर्शन के लिए सीमित सुविधाएँ हैं। रेडियो और टेलीविजन सुविधाएँ, दिल्ली और कश्मीर विश्वविद्यालयों के अध्ययन केन्द्रों में सीमित हैं।

उपरोक्त चर्चा से आप एकल और दोहरी प्रणाली वाली दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के बीच समानताओं और अंतर को स्पष्ट रूप से समझ चुके होंगे। संपूर्ण रूप से, एकल प्रणाली वाले दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में मुक्त शिक्षा की दिशा में आगे बढ़ने के लिए अधिक व्यवस्थित संगठनात्मक संरचना है। इसके विपरीत, दोहरी प्रणाली वाले संस्थान, अपनी सभी गतिविधियों के लिए पारंपरिक विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों पर पूरी तरह से निर्भर होते हैं। वे अपने मूल विश्वविद्यालय और संबद्ध महाविद्यालयों के भौतिक और मानव संसाधनों का उपयोग करते हैं। इस प्रकार, इन संस्थानों में अपने कार्य करने के लिए सीमित स्वायत्तता है, क्योंकि वे परंपरागत विश्वविद्यालय प्रणाली द्वारा नियंत्रित हैं। हालाँकि, दोहरी प्रणाली वाले संस्थानों में भी दूरस्थ शिक्षा के आधार को मजबूत बना सकते हैं, यदि दोनों संकायों/वर्गों में सुविधाएँ, इष्टतम स्तर पर साझा की जाए। इसके लिए, पारंपरिक विश्वविद्यालयों के नियंत्रण से उन्हें मुक्त करने के लिए कुछ संरचनात्मक परिवर्तन करना आवश्यक है।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

3) किस संदर्भ में, दूरस्थ शिक्षा के एकल प्रणाली संगठन में दिए गए पाठ्यक्रम, विधियाँ और मीडिया, दोहरी प्रणाली के संगठनों की तुलना में खुलेपन के लिए अधिक प्रवृत्त हैं?

.....

.....

.....

.....

13.4.3 दूरस्थ शिक्षा संस्थानों का कंसोर्टियम प्रतिमान

यह एक उभरता हुआ प्रतिमान है। इस प्रतिमान में, विभिन्न दूरस्थ शिक्षा संस्थान परस्पर अन्तःक्रिया करते हैं और संसाधनों के सामान्य संघ को साझा करते हैं। यह कार्यक्रमों के प्रतिलिपिकरण और संसाधनों की बर्बादी से बचने में सहायता करता है। संस्थानों की अद्वितीयता और विशिष्टीकरण की पहचान की जा सकती है। एक संस्था का प्रमुख योगदान अन्य संस्थानों द्वारा साझा किया जा सकता है। विभिन्न दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में उपलब्ध मौजूदा सुविधाओं का इष्टतम उपयोग करना संभव है।

भारतीय संदर्भ में, पूर्ववर्ती दूरस्थ शिक्षा परिषद, यानी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तहत, वर्तमान दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो ने विभिन्न प्रकार के दूरस्थ शिक्षा संस्थानों को पास लाने के लिए प्रमुख भूमिका निभाई, क्योंकि दूरस्थ शिक्षा परिषद की एक गतिविधि "दूरस्थ शिक्षा संस्थानों द्वारा साझा करने के लिए कार्यक्रमों के एक सामान्य संघ की पहचान करना" था।

आप निम्नलिखित आकृति से संघ प्रतिमान को समझ सकते हैं:

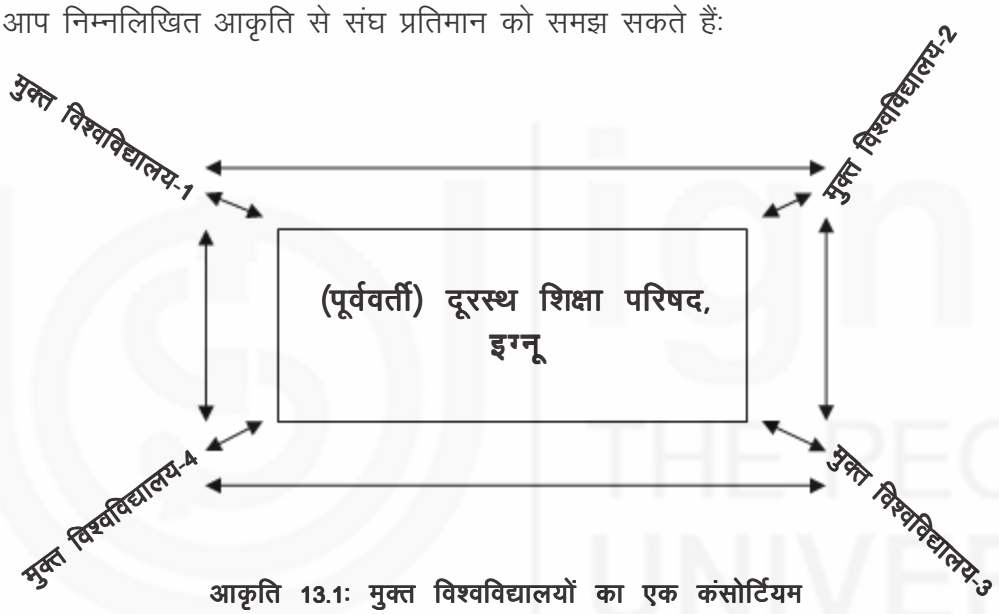

आकृति 13.1: मुक्त विश्वविद्यालयों का एक कंसोर्टियम

इस प्रतिमान में आप यह पहचानेंगे कि तत्कालीन दूरस्थ शिक्षा परिषद, मुक्त विश्वविद्यालयों की गतिविधियों का समन्वय किया था। दूसरे शब्दों में, दूरस्थ शिक्षा परिषद के माध्यम से मुक्त विश्वविद्यालयों परस्पर अंतःक्रिया करते हैं। समान कार्यक्रम के लिए एक मुक्त विश्वविद्यालय की अध्ययन सामग्री का दूसरे मुक्त विश्वविद्यालय के द्वारा प्रयोग किया जाना, परस्पर अन्तःक्रिया का एक तरीका है। उदाहरण के लिए, राज्य मुक्त विश्वविद्यालय जैसे कोटा मुक्त विश्वविद्यालय, यशवन्तराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय प्रबन्धन कार्यक्रमों के लिए इग्नू की साम्रगियों का उपयोग कर रहे हैं। विभिन्न मुक्त विश्वविद्यालय इग्नू की टेलीकांफ्रेंसिंग सुविधाओं और सेवाओं का उपयोग अक्सर कर रहे हैं। मुक्त नेटवर्किंग (प्रसार) (ओ.पी.ई.एन.ई.टी.), देश के सभी मुक्त विश्वविद्यालयों के साथ दो-तरफा ऑडियो और एक-तरफा वीडियो टेलीकांफ्रेंसिंग के लिए दूरस्थ शिक्षा परिषद-इग्नू द्वारा स्थापित किया गया है। संसाधनों को साझा करने के अतिरिक्त, मुक्त विश्वविद्यालयों के क्रेडिट भी साझा करते हैं। उदाहरण के लिए, एक उम्मीदवार जो एक मुक्त विश्वविद्यालय (मुक्त विश्वविद्यालय 1) में बी.ए. में पंजीकृत है, डिग्री के एक भाग के रूप में दूसरे मुक्त विश्वविद्यालय (उदाहरण, मुक्त विश्वविद्यालय 2) से पाठ्यक्रमों के कुछ क्रेडिट चुन सकते हैं। दूरस्थ शिक्षा परिषद के उपयुक्त समन्वय के माध्यम से क्रेडिट को साझा करना संभव हुआ। इसने दूरस्थ शिक्षा विद्यार्थियों को, विभिन्न मुक्त विश्वविद्यालयों में उपलब्ध सैकड़ों

प्रकार के पाठ्यक्रमों के संघ में से अपने विकल्प के पाठ्यक्रम चुनने के अवसर प्रदान किए। उन्नत संचार प्रौद्योगिकी, संस्थानों के प्रसार/नेटवर्किंग को सुविधाएँ प्रदान कर सके जिनका दूरस्थ शिक्षा परिषद द्वारा निरीक्षण किया गया था। यह दृष्टिकोण, हालाँकि, विभिन्न दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के स्वैच्छिक आपसी सहयोग और समझ के अभाव की कमियों से ग्रस्त है। फिर भी, इस प्रतिमान से, दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के आम मंच से मुक्त अधिगम प्रणाली के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलेगी जिसे आजीवन शिक्षा और अधिगम समाज को भविष्य में सहज करने के लिए रास्ता बन जाता है।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

4) एकल प्रणाली वाले संगठनों पर कंसोर्टियम के क्या लाभ हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

13.5 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की संगठनात्मक संरचना

भारतीय संदर्भ में, जैसा कि खंड 1 की इकाई 3 में बताया गया है, वहाँ 210 स्वीकृत परंपरागत विश्वविद्यालय हैं जो पत्राचार पाठ्यक्रम/दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम प्रदान करते हैं। इन विश्वविद्यालयों में नियमित परिसर-आधारित अध्ययनों के माध्यम से शिक्षण प्रमुख कार्य होता है। इसके साथ ही, वे पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थान या दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के माध यम से पत्राचार शिक्षा कायक्रम का आयोजन करते हैं। ये संस्थान, पारंपरिक आमने-सामने वाली प्रणाली और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली दोनों में पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं और इस तरह संस्थानों की दोहरी प्रणाली के रूप में जाने जाते हैं। पंद्रह मुक्त विश्वविद्यालय, एकल प्रणाली अर्थात् केवल दूरस्थ व्यवस्था के माध्यम से कार्यक्रम/पाठ्यक्रम आयोजित करते हैं। इसलिए, मुक्त विश्वविद्यालय और अन्य संस्थान जो केवल दूरस्थ व्यवस्था माध्यम से पाठ्यक्रम आयोजित करते हैं, उसे एकल प्रणाली वाले संस्थान कहलाते हैं।

निम्नलिखित उपभागों में, आप भारत में एकल प्रणाली वाले राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, राज्य मुक्त विश्वविद्यालय और दोहरी प्रणाली वाले विश्वविद्यालय की संगठनात्मक संरचना के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

13.5.1 इग्नू की संगठनात्मक संरचना

इग्नू एक राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय है। यह एक स्वायत्त मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विश्वविद्यालय है जिसका पूरे देश में अधिकार क्षेत्र है। बेशक, यह अन्य देशों में भी कार्यक्रम प्रदान करता है। इसकी संगठनात्मक संरचना को आकृति 13.2 में देख सकते हैं।

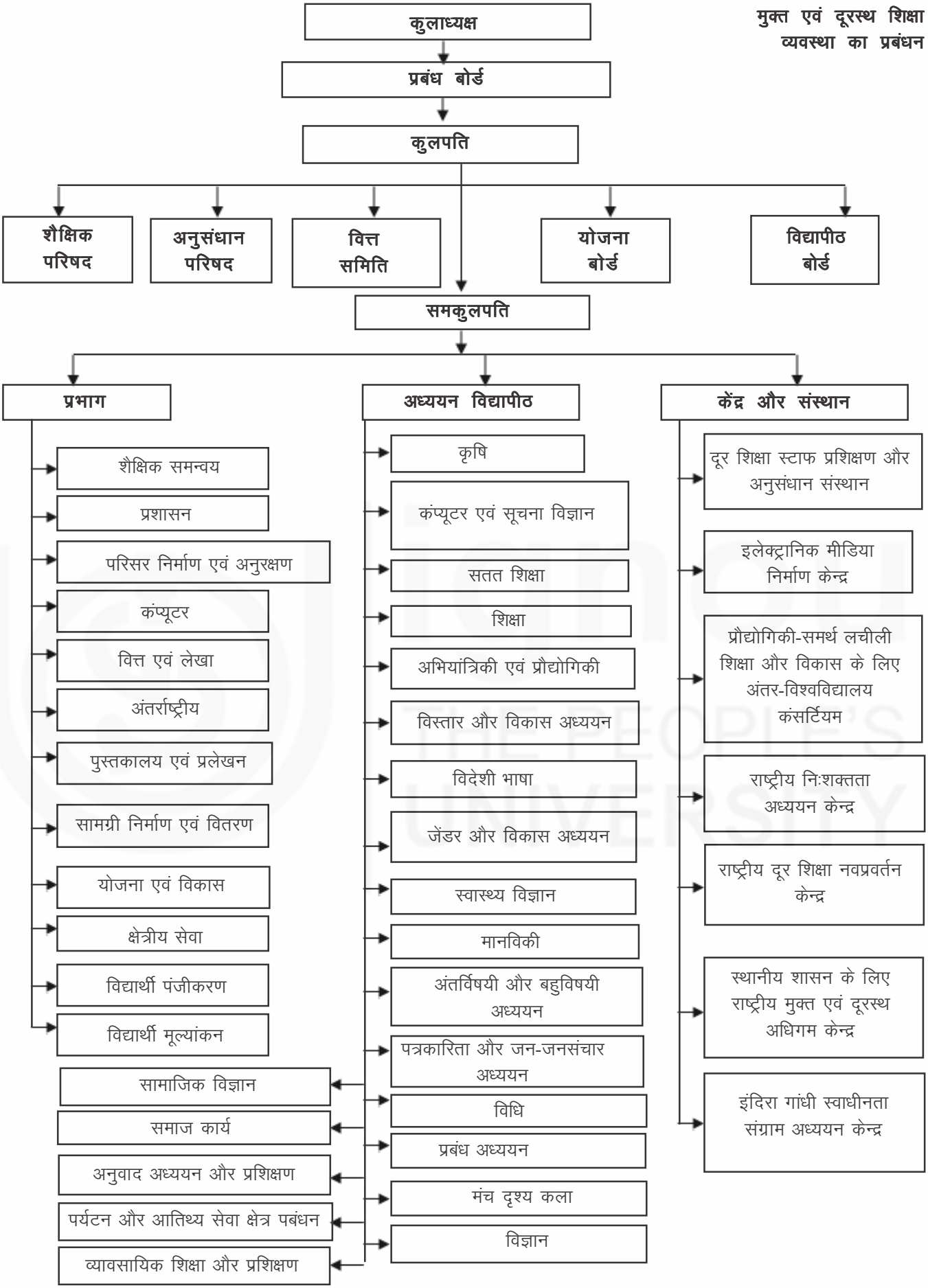

आकृति 13.2: इग्नू की संगठनात्मक संरचना

स्रोतः इग्नू (2016), *प्रोफाइल 2016,* नई दिल्लीः इग्नू

आकृति 13.2 में दिए गए फ्लो चार्ट से आप देख सकते हैं कि इग्नू में सर्वोच्च अधिकारी कुलाध्यक्ष (विजिटर) है और इसके बाद प्रबंधन बोर्ड, और कुलपति है। मुख्य नीति निर्णय लेने वाली संस्था इसका प्रबंधन बोर्ड है। अन्य निर्णय लेने वाली संस्थाएँ हैं; शैक्षणिक परिषद, योजना बोर्ड और वित्त समिति। मुख्य कार्यकारी प्रमुख कुलपति जिन्हें समकुलपति, विभिन्न शैक्षिक विद्यापीठ और प्रभाग के निदेशक और अन्य अधिकारियों के बीच कुलसचिव उन्हें सहायता प्रदान करते हैं। योजना बोर्ड, शैक्षिक परिषद और वित्त समिति, इग्नू की दूरस्थ शिक्षा गतिविधियों के प्रबंधन के साथ जुड़े हुए हैं। यहाँ पर यह ध्यान दिया जा सकता है कि इग्नू के तहत पूर्ववर्ती दूरस्थ शिक्षा परिषद, जो समन्वयन और देश में उच्च शिक्षा स्तर के मुक्त शिक्षा प्रणाली और विभिन्न दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के मानकों को बनाए रखने के कार्य का निर्वहन कर रहा था वह इसमें नहीं है क्योकि वह इग्नू से बाहर है।

इग्नू में तीन प्रकार की इकाइयाँ हैं : जैसे शैक्षिक विद्यापीठ, प्रभाग और केन्द्र एवं संस्थान। शैक्षिक विद्यापीठ शैक्षिक मामलों की देखरेख करते हैं, जबकि प्रभाग, प्रशासनिक और विद्यार्थी सहायता सेवाओं की गतिविधियों को देखते हैं और केन्द्र/संस्थान कुछ विशिष्ट शैक्षिक गतिविधियों का प्रदर्शन करते हैं। वहाँ 21 शैक्षिक विद्यापीठ, 12 प्रभाग और 7 संस्थान एवं केन्द्र हैं। प्रत्येक विद्यापीठ, संस्थान या केन्द्र का नेतृत्व एक निदेशक करता है, जबकि प्रभाग के प्रमुख कुलसचिव हैं और अन्य के निदेशक हैं।

इग्नू एक तीन-स्तरीय प्रणाली के रूप में कार्य करता है, यानि इसका मुख्यालय नई दिल्ली में स्थिति है, 67 क्षेत्रीय केन्द्र देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित हैं और 3000 से अधिक अध्ययन केन्द्र, कार्य केन्द्र आदि क्षेत्रीय केन्द्रों के तहत पूरे देश में फैले हुए हैं।

13.5.2 राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों की संगठनात्मक संरचना

राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय और राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों के बीच एक प्रमुख कार्यात्मक अन्तर है। भारत के राष्ट्रपति इग्नू (राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय) के कुलाध्यक्ष हैं सम्बन्धित

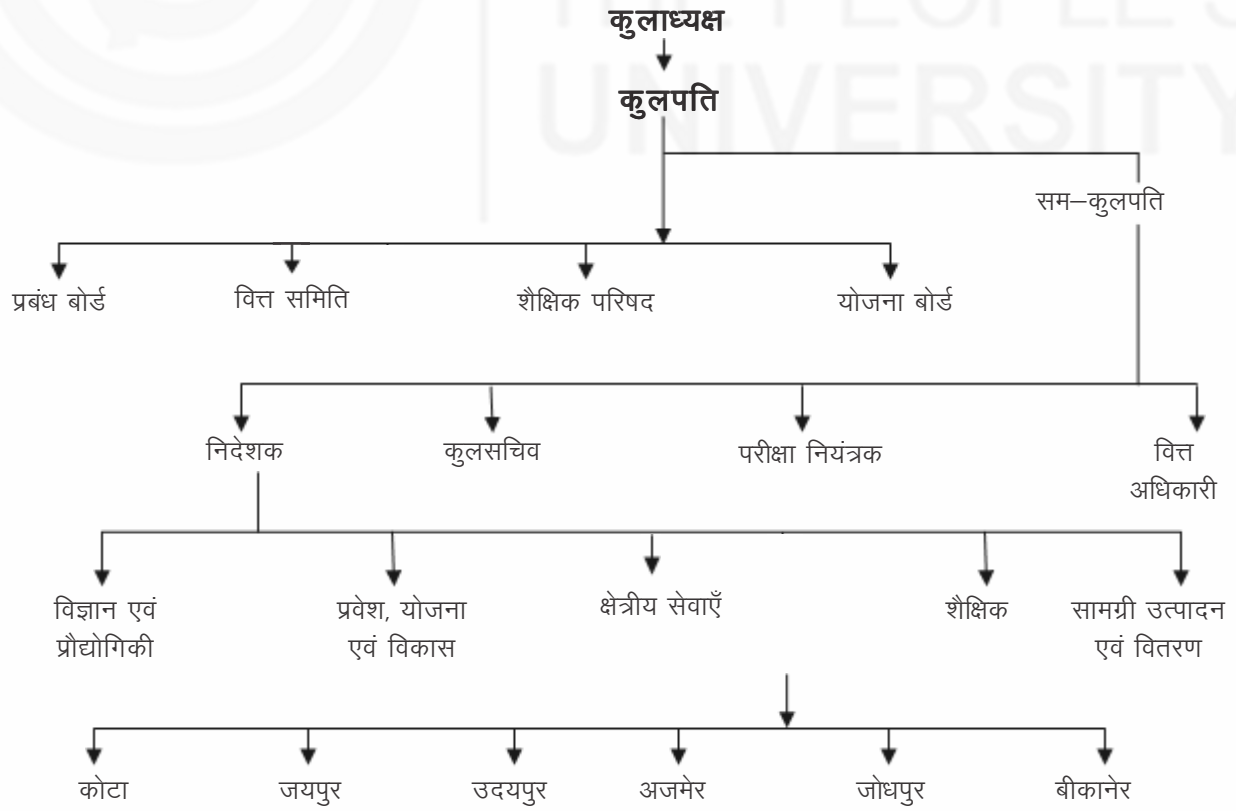

आकृति 13.3: कोटा मुक्त विश्वविद्यालय की संगठनात्मक संरचना

स्रोतः साहू, पी.के. (1993) दूरस्थ उच्च शिक्षा, संचारः नई दिल्ली।

विश्वविद्यालय की संगठनात्मक संरचना

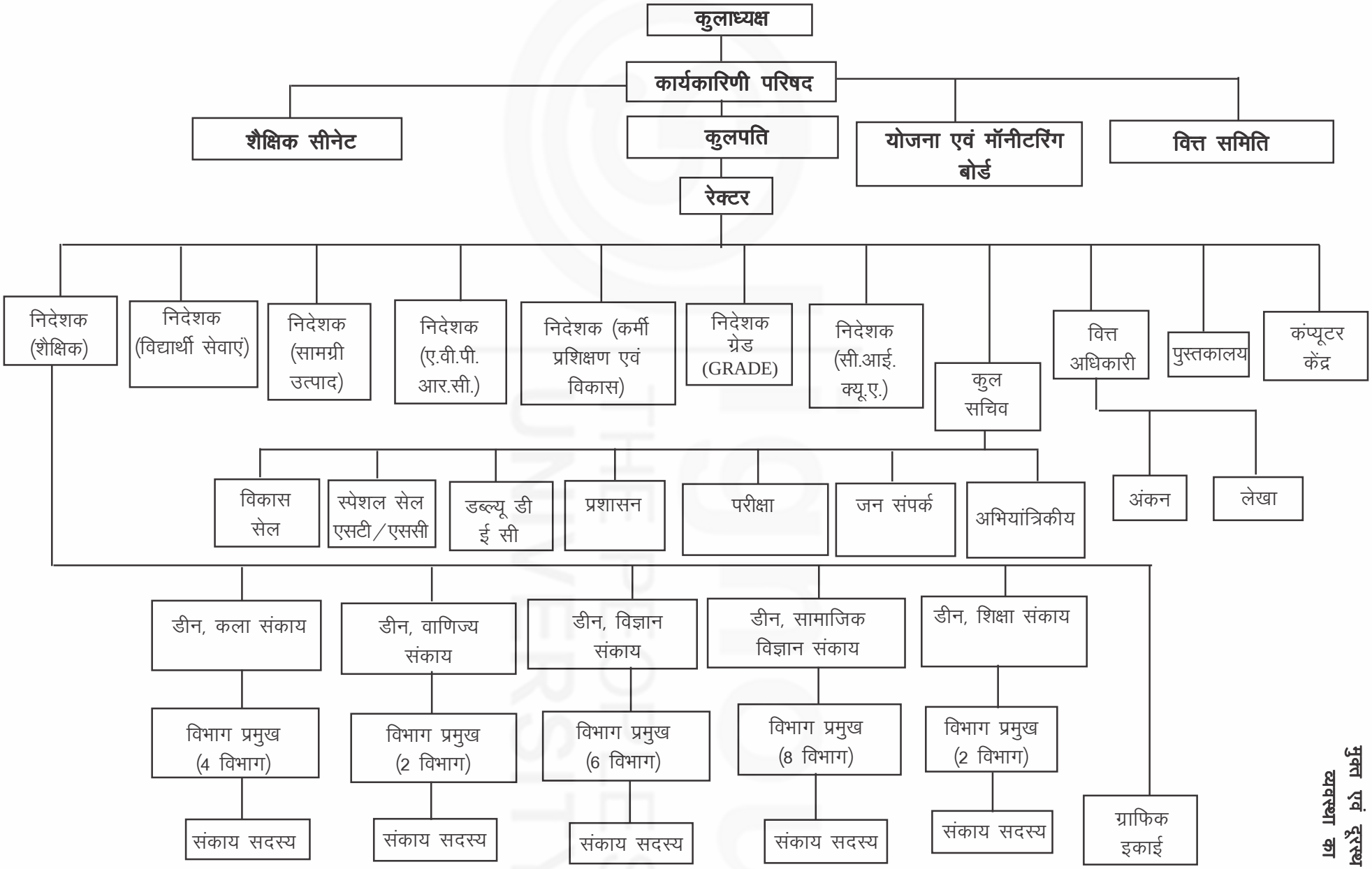

आकृति 13.4: डॉ. बी. आर. अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, आंध्र प्रदेश की संगठनात्मक संरचना

स्रोतः http://www.braou.ac.in/managementdescripationpages.php?id=8.

राज्य के राज्यपाल राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के कुलाध्यक्ष होते हैं। उदाहरण के लिए, आप आकृति 13.3 में देखें, जो कोटा मुक्त विश्वविद्यालय की संगठनात्मक संरचना के प्रवाह चार्ट को प्रस्तुत करता है। कोट मुक्त विश्वविद्यालय एक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय है, जिसके शीर्ष प्राधिकारी कुलाध्यक्ष हैं। अन्य प्राधिकारियों में कुलपति और समकुलपति सम्मिलित हैं। प्रमुख निर्णय लेने वाले निकाय हैंः प्रबंधन बोर्ड और शैक्षिक परिषद। ऊपर निर्णय लेने वाले निकायों के साथ अन्य बोर्ड और समितियाँ जुड़ी हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी, क्षेत्रीय सेवाएँ, प्रवेश, योजना और विकास, शैक्षणिक और सामग्री उत्पादन और वितरण गतिविधियों की देखरेख निदेशक करते हैं। शैक्षणिक प्रभागों में विभिन्न शिक्षण विभाग, विद्यार्थी इकाई और अनुसंधान इकाई हैं। कुछ दूसरे अधिकारी हैं जिन्हें स्वतंत्र प्रभार प्रदान किए गए हैं जैसे कुलसचिव, परीक्षा नियंत्रक, वित्त अधिकारी और पुस्तकालयाध्यक्ष। प्रत्येक प्रभाग/इकाई, उपप्रभागों/उप इकाई में विभाजित है।

विश्वविद्यालय तीन-स्तरीय प्रणाली में अपनी गतिविधियों का विकेन्द्रीकरण करने के लिए इग्नू के प्रतिमान का अनुसरण करता है, अर्थात् मुख्यालय स्तर (कोटा में), विभिन्न स्थानों पर क्षेत्रीय केन्द्र स्तर और अध्ययन केन्द्र स्तर।

वर्तमान में कोटा मुक्त विश्वविद्यालय के साथ 7 क्षेत्रीय केन्द्र और 82 अध्ययन केन्द्र हैं (वेबसाइट: https://www.vmou.ac.in/rc/1)।

कुछ विश्वविद्यालयों में प्रति उपकुलपति नहीं होते हैं, इसके बजाय उनके पास कुलाधिसचिव (Rector) होता है। उदाहरण के लिए, आप आकृति 13.4 प्रवाह चार्ट में देख सकते हैं, जो डॉ. बी. आर. अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, आंध्र प्रदेश की संगठनात्मक संरचना को प्रदर्शित कर रहा है, जो राज्य मुक्त विश्वविद्यालय है, जो भारत में मुक्त शिक्षा प्रणाली का अग्रणी या प्रवर्तक है।

सर्वोच्च प्राधिकारी कुलपति है। अन्य अधिकारियों में उपकुलपति, और कुलाधिसचिव जिसे कुलसचिव, वित्त अधिकारी, निदेशक, डीन और विभागाध्यक्ष सहायता प्रदान करते हैं। प्रमुख निर्णय लेने वाले निकाय हैंः कार्यकारी परिषद, शैक्षणिक अधिसभा, योजना और निरीक्षण बोर्ड और वित्त समिति। इग्नू और कोटा मुक्त विश्वविद्यालय के विपरीत, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय में क्षेत्रीय केन्द्र नहीं हैं और इसके बजाय केवल अध्ययन केन्द्र हैं।

13.5.3 पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थानों/दूरस्थ शिक्षा निदेशालयों की संगठनात्मक संरचना

मुक्त विश्वविद्यालय के विपरीत, पारंपरिक विश्वविद्यालयों के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम एक निदेशालय या संस्थान के माध्यम से चलाए जाते हैं। सस्थान/निदेशालय विश्वविद्यालय के शिक्षण विभाग की स्थिति को एक रख सकते हैं या नहीं। निदेशालय, आमतौर पर निदेशक की अध्यक्षता में रहता है। निदेशालय के प्रमुख कार्य पाठ्यक्रम सामाग्रियों का विकास और उत्पादन, प्रवेश, वितरण प्रणाली, विद्यार्थी सहायता सेवाएँ जिसमें सम्मिलित हैं सत्रीय कार्य मूल्यांकन और व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम आदि। पाठ्यक्रम मूल विश्वविद्यालय की शैक्षणिक परिषद के द्वारा प्रारंभ किए गए हैं। पाठ्यक्रम, सम्बन्धित विषय/शिक्षण क्षेत्रों के अध्ययन बोर्ड द्वारा विकसित किया गया है जो विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग के प्रमुख की अध्यक्षता में है। अध्ययन बोर्ड के सदस्य, विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग से सम्बन्धित हैं। पाठ्यक्रम विकास के अतिरिक्त, विश्वविद्यालय पत्राचार पाठ्यक्रम की परीक्षाओं को नियंत्रित करता है। निदेशालय की भूमिका अधिकतर क्रियाशील प्रकार की है।

प्रमुख नीतिगत निर्णय मूल विश्वविद्यालय के वैधानिक निकायों द्वारा लिए जाते हैं जैसे शैक्षणिक परिषद, कार्यकारी परिषद, संकाय परिषद, अध्ययन बोर्ड, आदि। हालाँकि निदेशक विश्वविद्यालय की संवैधानिक निकाय के एक पढ़ने औपचारिक सदस्य हैं जैसे शैक्षणिक परिषद और कार्यकारी परिषद। पत्राचार पाठ्यक्रमों के अन्य संकाय सदस्यों को ऐसे निकायों में प्रतिनिधित्व नहीं मिलता है। तदनुसार, पत्राचार पाठ्यक्रमों के निदेशालय की संगठनात्मक संरचना का निर्माण दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों के क्रियाशील भाग के संदर्भ में किया गया है।

नीचे प्रवाह चार्ट दिखाया गया है (आकृति 13.5 देखें) जो हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला के पत्राचार पाठ्यक्रमों के निदेशालय की संगठनात्मक संरचना प्रकट कर रहा है, जो देश के सबसे अधिक प्राचीन पत्राचार के पाठ्यक्रमों के संस्थानों में से एक है।

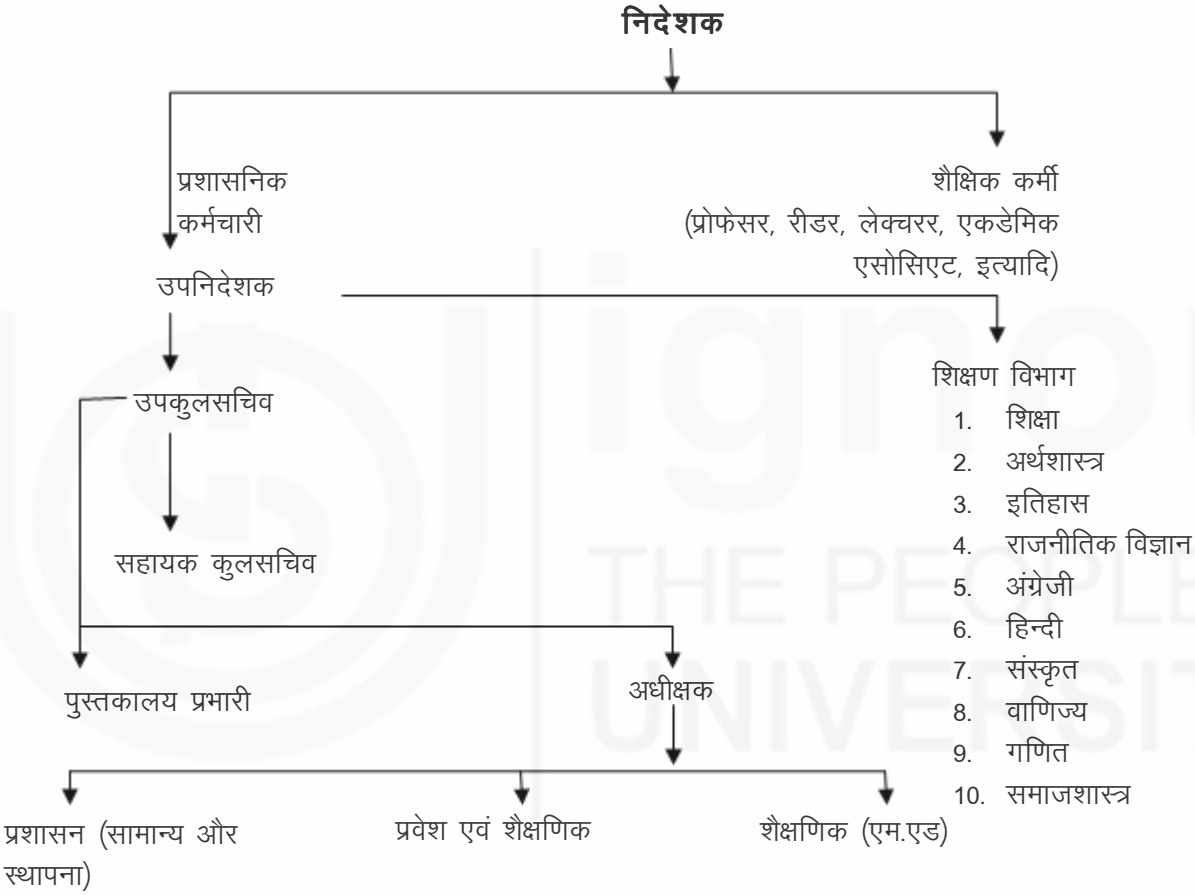

आकृति 13.5: हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला के पत्राचार पाठ्यक्रमों के निदेशालय की संगठनात्मक संरचना

स्रोतः साहू, पि.के. (1993). *दूरी पर उच्च शिक्षा,* नई दिल्लीः संचार।

विश्वविद्यालय की वैधानिक स्थिति के अनुसार, निदेशक प्रशासनिक और शैक्षणिक गतिविधियों की दोहरी जिम्मेदारियों के साथ पत्राचार पाठ्यक्रमों के निदेशालय में उच्चतम पद पर स्थित हैं। निदेशक के सहायक दो उपनिदेशक होते हैं जो दोनों प्रशासनिक और शैक्षणिक जिम्मेदारियाँ निभाते हैं। प्रशासनिक वर्गों को उपकुलसचिव, सहायक कुलसचिव, अधीक्षक आदि के क्रम में व्यवस्थित किया जा सकता है। विभिन्न प्रशासनिक इकाइयाँ पंजीकरण, वित्त, परीक्षा आदि के संबंध में मूल विश्वविद्यालय के प्रशासनिक खंड के साथ सीधे संपर्क रखती हैं। प्रशासन, प्रवेश, सामग्री उत्पादन, वितरण और विद्यार्थी सहायता सेवाओं के संगठन का ध्यान रखता है। शैक्षणिक पद निदेशकों के अधिकारियों के तहत प्रोफेसरों, रीडरों और प्रवक्ताओं के पदों के साथ संगठित होते हैं। वे भौतिक विकास, प्रवेश,

विद्यार्थी सहायता सेवाओं की गतिविधियो के संगठन की देखरेख करते हैं। जैसा कि ऊपर बताया गया है, शैक्षणिक निर्णय संबंधी प्रमुख जिम्मेदारियाँ जैसे कार्यक्रम/पाठ्यक्रम विकास का निर्माण और परीक्षाओं की देखरेख विश्वविद्यालय स्तर के निकायों द्वारा की जाती हैं जैसे शैक्षिक परिषद, अध्ययन बोर्ड और मूल विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग।

भाग 13.5 ने आपको राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, राज्य मुक्त विश्वविद्यालय और पत्राचार शिक्षा के निदेशालय की संगठनात्मक संरचना की एक व्यापक समझ प्रदान की। प्रयोजन, आप को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की कार्यात्मक प्रणाली के गठन की संगठनात्मक संरचना का उचित विचार प्रदान करना था। अब हम इसकी उप-प्रणाली या उपतंत्र देखें।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

5) क) मुक्त विश्वविद्यालय के संगठन की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ख) मुक्त विश्वविद्यालय के संगठन और पारंपरिक पत्राचार प्रणाली में क्या अंतर है?

.....

.....

.....

.....

.....

13.6 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के उपतंत्र

जैसा कि हम सब जानते हैं कि शैक्षिक संगठनों या पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के प्राथमिक उद्देश्य शिक्षण हैं (मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणालियां में "अधिगम" पर बल दिया गया है)। इसमें पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए संसाधन, विद्यार्थी, अध्यापक, पाठ्यक्रम, सामग्री को एक साथ लाने में प्रबंधकीय विशेषज्ञता सम्मिलित है। पारंपरिक शैक्षणिक संस्थान मुख्य रूप से दो उप-प्रणालियां – शैक्षिक और प्रशासनिक – के माध्यम से संचालित होते हैं। शैक्षणिक उप प्रणाली उन गतिविधियों को संदर्भित करती है जिनके माध्यम से संगठन अपने उद्देश्य प्राप्त करता है और संस्थान को वैधता, समग्र दिशा और विश्वसनीयता प्रदान करता है। प्रशासनिक उपप्रणाली शैक्षणिक उपप्रणाली को सभी आवश्यक संसाधन, गतिविधियों का समन्वयन और पर्यावरण और प्रणाली के बीच

मध्यस्थता प्रदान करने में स्वयं को संलग्न करती है। लेकिन, दूरस्थ शिक्षा प्रबंधों को बहुत अधिक जरूरी कार्य करने होते हैं। कए और रंबल (1981) ने दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की चार उप-प्रणालियों की व्यापक चर्चा की हैः नियामक उप-प्रणाली, पाठ्यक्रम उप-प्रणाली, विद्यार्थी उप-प्रणाली और व्यवस्थापन उप-प्रणाली। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के भीतर सामान्य कार्यात्मक प्रभागों की अंतरंग परीक्षाओं ने हमें कुछ सुझाव दिए हैं कि गतिविधियों और उपप्रणालियों के तीन मुख्य संग्रह हैं : प्रशासनिक, शैक्षणिक और औद्योगिक – जो एक मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा उद्यम के चलने से सम्बन्धित है। हम इनके बारे में संक्षेप में चर्चा करेंगे।

13.6.1 प्रशासनिक उपतंत्र

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान के द्वारा दायित्व में ली गई प्रशासनिक गतिविधियाँ, एक उद्योग या पारंपरिक प्रणाली के समान हैं। फिर भी, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान में अनुदेशात्मक प्रणाली को अधिक जटिल डिजाइनों की वजह से, विभिन्न विभागों के समन्वय और संचालन गतिविधियों पर नियंत्रण, उच्च स्तर पर योजना और प्रबंधन में महत्वपूर्ण बन गए हैं।

दूरस्थ शिक्षा संस्थान के प्रमुख प्रशासनिक कार्यों में शामिल हैंः योजना, निर्णयन, संसाधनों का प्रबन्धन, नियंत्रण और समन्वय और मूल्यांकन। विशेष रूप से इन कार्यों में निम्नलिखित सम्मिलित हो सकते हैं।

- संगठन के भविष्य के निर्देशों की दूरदर्शिता और नेतृत्व प्रदान करने सहित, सामाजिक नियोजन
- विपणन के अवसरों की पहचान करना
- आवश्यकताओं के आंकलनों के सर्वेक्षणों का संचालन करना
- कार्यक्रम विकास सहित सशक्त कार्यक्रमों की पहचान करना, कार्यक्रमों का विकास और निर्धारण करना, और सशक्त विद्यार्थियों के लिए कार्यक्रमों का विपणन करना
- कार्यक्रम मान्यता
- कार्यक्रम के पूरे वित्तीय पहलू के लिए जिम्मेदारी
- गुणवत्ता नियंत्रण सुनिश्चित करने के लिए कार्यक्रमों की समीक्षा और मूल्यांकन और सामान्य निरीक्षण
- अच्छे अभ्यास के मानकों और सिद्धान्तों का अनुपालन
- नियमों के साथ अनुपालन, आदि।

13.6.2 शैक्षणिक उपतंत्र

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की शैक्षणिक उपतंत्र में दो प्रमुख गतिविधियाँ सम्मिलित हैंः अधिगम-शिक्षण सामग्री विकास और विद्यार्थी सहायता सेवाएँ।

सामग्री विकास में शिक्षाविदों के योगदान की आवश्यकता होती है जैसे पाठ्यक्रम योजनाकार, विषय विशेषज्ञ, अध्यापक और अन्य शैक्षिक समूहों जैसे अनुदेशात्मक स्वरूपकर्ता, मीडिया उत्पादक, संपादक, ग्राफिक डिजाइनर और अन्य व्यक्ति जो मीडिया उत्पादन में सहायता करते हैं। सामग्री विकास गतिविधियों से उत्पादन मूलरूप/प्रोटोटाइप पाठ्यक्रम सामग्री हैं जो सामग्री उत्पादन की उप-प्रणाली की प्रक्रिया के माध्यम से तैयार उत्पाद में बदल जाती

हैं। इसके साथ, इस उपतंत्र में गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला निम्नलिखित के रूप में सम्मिलित है :

- यह सुनिश्चित करना कि कोर्सवेयर स्वीकार्यता के मानको पूरा करती है।
- कार्यक्रम के कार्यान्वयन से सम्बन्धित मामलों में प्रशिक्षण, शैक्षणिक परामर्श और तकनीकी समर्थन।
- संकाय और विद्यार्थी सहायता के लिए 24X7 सहायता डेस्क प्रदान करना।
- व्यक्तिगत पाठ्यक्रम रखरखाव, मूल्यांकन और अनुवर्ती कार्य जिसमें ऑनलाइन या वेब आधारित पहुँच के लिए मुद्रित पाठ्यक्रमों का अंकीय (डिजिटल) संस्करण को अपलोड करना सम्मिलित है।
- ऑनलाइन पाठ्यक्रम की अवधारणा, डिजाइन और विकास, आदि यथा आवश्यक संकाय की सहायता के लिए शिक्षण-विकास और अंकीय मीडिया उत्पादन कर्मचारी वर्ग का प्रावधान करना।

विद्यार्थी सहायता, सामग्री विकास से पूरी तरह से अलग है। सहायता गतिविधियाँ, मूल रूप से विद्यार्थियों के अधिगम गतिविधियों और उनकी प्रगति प्रबन्धन की सुविधा से संबद्ध हैं। दूरस्थ शिक्षण और विद्यार्थियों को दी गई सहायता में, तीन विशिष्ट गतिविधियाँ सम्मिलित हैं :

i) विद्यार्थियों के लिए अध्ययन सामग्री, पूरक सामग्री और जानकारी का प्रेषण करना जैसे कि काम की अनुसूचियाँ, अध्ययन केन्द्रों के कार्य और उनके लिए उपलब्ध अन्य सुविधाएँ।

ii) नियत कार्य की प्रतिक्रियाओं पर काम करना, दूरस्थ शिक्षा का दूसरा प्रमुख घटक है। यह गतिविधि स्थानीय अध्ययन केन्द्रों द्वारा नियंत्रित की जाती है। इसमें, सत्रीय कार्य को अध्यापक द्वारा मूल्यांकन कराने की प्रतिक्रियाओं और उनके ग्रेड का प्रसंस्करण आदि गतिविधियाँ सम्मिलित हैं।

iii) अध्ययन केन्द्रों में, परामर्श और अनुशिक्षण सत्रों के लिए कर्मचारियों की नियुक्ति, अनुशिक्षण या परामर्श सत्रों की व्यवस्था, पर्याप्त पुस्तकालय प्रदान करना, ऑडियो/वीडियो और अन्य सुविधाएँ प्रदान करना।

13.6.3 औद्योगिक उपतंत्र

ओटो पीटर्स पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने शिक्षण सामग्रियों के बड़े पैमाने पर उत्पादन और दूरस्थ शिक्षा के सम्बन्धित कार्यों की तुलना वस्तुओं के औद्योगिक उत्पादन के साथ की थी। इस प्रकार, दूरस्थ शिक्षा एक शैक्षणिक उद्यम है जो एक औद्योगिक उद्यम की सभी विशेषताओं को प्रदर्शित करती है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में उत्पादन प्रक्रिया में दो गतिविधियाँ होती हैं: विभिन्न प्रकार की अध्यापन/शिक्षणशास्त्र सामग्रियों का उत्पादन; और स्नातकों का उत्पादन, जैसे कि विभिन्न प्रकार के विश्वविद्यालयों के प्रमाणपत्र, डिप्लोमा और डिग्री के साथ। पूर्ववर्ती एक अद्वितीय औद्योगिक संचालन है, जबकि उत्तरवर्ती एक सामाजिक-शैक्षणिक-शैक्षिक संचालन है।

दूरस्थ शिक्षण संस्थानों या मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों आमतौर पर अपनी अनुदेशात्मक प्रणाली में बहुमीडिया दृष्टिकोण का पालन करते हैं और यह शिक्षणशास्त्र मुद्रित, श्रव्य और दृश्य के रूप में सामग्री उपलब्ध कराता है (रेडियो और टेलीविजन का उपयोग श्रव्य और

दृश्य सामग्री को प्रसारित करने के लिए भी किया जाता है जहाँ संभव और योजनाबद्ध हो) इन सामग्रियों से जुड़े मुख्य संचालन इस प्रकार हैं :

- शैक्षणिक प्रोटोटाइप/मूलरूप सामग्री का विकास करना;
- इन सामग्रियों का उत्पादन; और
- इन सामग्रियों का वितरण।

इस प्रकार, उत्पादन इकाइयों को विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन करना है जैसे निम्नलिखित हैं :

- विभिन्न पाठ्यक्रम सामग्री
- अनुपूरक सामग्री
- श्रव्य सामग्री
- वीडियो सामग्री
- प्रायोगिक किट, आदि।

साथ ही, उत्तरदायित्व और निरीक्षण को उद्देश्यों के लिए निर्धारित कार्यक्रमों के अनुसार विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन, भंडारण और प्रेषण बनाए रखा जाना चाहिए। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में, इन वस्तुओं में से प्रत्येक के लिए अक्षर और/अथवा संख्या कोड का उपयोग करके इसे सुनिश्चित किया गया है। मुद्रण सामग्री के मामले में आकार की विशिष्टता, चित्र, कागज की गुणवत्ता, मुद्रण प्रकार और रंग आदि, और श्रव्य एवं दृश्य के मामले में हस्ताक्षर ट्यून, अवधि, प्रस्तुति की भाषा आदि को मानकीकृत करना होता है। भंडारण के लिए स्थान प्रदान करने और इन सामग्रियों के वितरण से सम्बन्धित गतिविधियाँ, सम्बन्धित सामग्री का समय पर पहुँचना सुनिश्चित करने के लिए क्षमता योजना बहुत महत्वपूर्ण है।

"विपणन" एक अन्य औद्योगिक पहलू है जिसे दूरस्थ शिक्षा संस्थानों द्वारा अपनाया गया है। पहले से ही प्रस्तावित किए गए कार्यक्रम के लिए समय-समय पर अपने स्वयं के ग्राहकों के उत्पादन के लिए विज्ञापन और दूसरे प्रचार उपाय, दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अधिक महत्वपूर्ण हैं, और विशेष प्रयास जब भी एक नया पाठ्यक्रम/कार्यक्रम प्रारंभ किया गया हो।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

6) आप इस कथन को कैसे उचित सिद्ध करेंगे, कि "दूरस्थ शिक्षा प्रणाली एक औद्योगिक प्रणाली है।"?

.....

.....

.....

.....

.....

13.7 सारांश

इस इकाई में, हमने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के विशेष संदर्भ में, प्रबन्धन प्रक्रियाओं और मुद्दों का अवलोकन प्रस्तुत किया है। हमने प्रबन्धन प्रणालियां, विभिन्न प्रतिमानों और मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थानों की संगठनात्मक संरचना के बारे में चर्चा की। आपने देखा होगा कि दूरस्थ शिक्षा संस्थान या एक मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान के प्रभावी कार्य के लिए एक उचित प्रसार/नेटवर्किंग, संचार, समूह का काम, स्पष्ट जिम्मेदारियाँ, एक प्रभावी प्रबन्धन सूचना तंत्र (एम.आई.एस.) और सहयोगी लोकतांत्रिक निर्णय लेना होना चाहिए। पाठ्यक्रम के डिजाइन और विकास, मीडिया, विद्यार्थी सहायता सेवाएँ, आँकलन और मूल्यांकन प्रणाली, प्रबंधन सूचना तंत्र और नेटवर्किंग, आदि से संबद्ध गतिविधियों में शामिल इकाइयों या प्रभागों को उच्च संगठनात्मक प्रभावशीलता, संगठनात्मक गुणवत्ता और विद्यार्थियों की संतुष्टि के लिए अच्छे से संभालने और प्रबंधित करने की आवश्यकता है। हमने तीन उप-प्रणालियों पर भी ध्यान केन्द्रित किया – प्रशासनिक, शैक्षणिक और औद्योगिक – जो दूरस्थ शिक्षण संस्थान की परिचालन गतिविधियों को परिभाषित करती हैं। ये उप-प्रणालियाँ मुख्यतः प्रणाली की औद्योगिक प्रकृति और प्रक्रियाओं से सम्बन्धित हैं। हालाँकि अपने कार्यों से अलग दिखते हैं, वे एक के समान लक्ष्य के लिए मिलकर काम करते हैं और दूरस्थ शिक्षा के संपूर्ण प्रणाली बनाने में योगदान करते हैं। वे विभिन्न हितधारकों को प्रभावी ढंग और कुशलता से सेवा देने के लिए दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की दूसरी उप प्रणालियां से और बाहर से अपने संसाधन प्राप्त करते हैं।

13.8 "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर

1) विपणन एक गतिविधि है, और दूरस्थ शिक्षा तंत्र, उत्पादों और सेवाओं का विपणन के लिए एक और विशेष गतिविधि की आवश्यकता है। दूरस्थ शिक्षा संस्थान केंद्रीय रूप से सामग्री, सेवाओं और विशेषज्ञता का विपणन कर सकता है या अध्ययन केन्द्रों के स्तर तक प्रचालन को विकेन्द्रीकृत कर सकते हैं। बाहरी स्रोतों से भी विपणन करवा सकते हैं, जिसमें प्रकाशक और वितरक ऐसा करते हैं, जिसके द्वारा संस्था के लिए निर्धारित शुल्क का भुगतान हो। अंतर्राष्ट्रीय विपणन के लिए, कठोर और निरंतर विज्ञापन, अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों में भागीदारी और प्रदर्शन बहुत जरूरी है।

2) क) रंबल द्वारा वर्णित, दूरस्थ शिक्षा के प्रबन्धन प्रतिमान इस प्रकार हैं:

   i) संस्था-केन्द्रित प्रतिमान,

   ii) व्यक्ति-केन्द्रित प्रतिमान, और

   iii) समाज-आधारित प्रतिमान।

   ख) फ्रीमैन ने छह प्रकार की मुक्त शिक्षा प्रणालियां की पहचान की है। वे निम्नलिखित हैं।

   i) गति परिसर-आधारित मुक्त अधिगम प्रणाली

   ii) गति संगठन-आधारित मुक्त अधिगम प्रणाली

   iii) गति व्यक्तिगत-आधारित मुक्त अधिगम प्रणाली

   iv) स्वयं-गति परिसर-आधारित मुक्त अधिगम प्रणाली

   v) स्वयं-गति संगठन-आधारित मुक्त अधिगम प्रणाली

   vi) स्वयं-गति व्यक्तिगत-आधारित मुक्त अधिगम प्रणाली

3) मुक्त विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में आधुनिकता, मुक्त प्रवेश प्रणाली और विद्यार्थी उन्मुख स्वायत्तता सम्मिलित हैं। वे क्रेडिट आधारित हैं और उन्नत तकनीक-आधारित बहुमीडिया पैकेज को अपनाते हैं जो अधिगम प्रणाली में खुलेपन को प्रोत्साहित करते हैं। ये विशेषताएँ दोहरी प्रणाली प्रतिमान में ज्यादातर अनुपस्थित हैं।

4) कंसोर्टियम प्रतिमान में सहयोगी दूरस्थ शिक्षा संस्थानों को संसाधनों को बेहतर ढंग से साझा करने के लाभ हैं। यह विभिन्न संसाधनों के बीच बहु-प्रवेश प्रणाली और क्रेडिट साझा करने का प्रोत्साहन करता है। दूसरी तरफ, एकल एवं दोहरी व्यवस्था वाले संस्थान केवल अपने संसाधनों या प्रणाली पर निर्भर करते हैं और इस प्रकार मुक्त शिक्षा के लिए अवसर तुलनात्मक रूप से प्रतिबंधित हैं।

5) i) एक मुक्त विश्वविद्यालय की मुख्य विशेषता, मुख्यालय, क्षेत्रीय केन्द्रों और अध्ययन केन्द्रों की एक तीन-स्तरीय संरचना वाली एक स्वायत्त प्रणाली कार्य हैं।

ii) मुक्त विश्वविद्यालय एक स्वायत्त दूरस्थ शिक्षा संस्थान है। पत्राचार पाठ्यक्रमों के संस्थान/दूरस्थ शिक्षा के निदेशालय, एक अधिगम विभाग/संस्थान के रूप में एक पारंपरिक विश्वविद्यालय की संरचना के अंतर्गत कार्य करते हैं। मुक्त विश्वविद्यालय के विपरीत, ये निदेशालय और संस्थान, प्रशासन और निर्णय लेने के सम्बन्ध में स्वायत्तता का आनंद नहीं लेते।

6) दूरस्थ शिक्षा प्रणालियाँ औद्योगिक प्रकृति की हैं क्योंकि उनके लिए ये आवश्यक हैं: i) पाठ्यक्रम सामग्री का भारी मात्रा में उत्पादन; ii) इन सामग्रियों का व्यवस्थित वितरण, iii) इन सामग्रियों का महत्वाकांक्षापूर्ण विपणन, आदि जो अनिवार्य रूप से औद्योगिक संचालित हैं।

13.9 संदर्भ ग्रंथ

Avabrath, G. (2013). Quality Assurance in Open Distance Learning: Learning: IGNOU a Case Study. *International Journal of Computer Science and Network*, Vol.2, Issue 1, pp.119-124; at http://ijcsn.org/IJCSN-2013/2-1/IJCSN-2013-2-1-66.pdf — Retrieved on 30-5-2017.

Freeman, R. (1997). *Managing Open Systems*, Kogan Page, London.

Guri, S. 1987, 'Quality control in distance learning', Open Learning, 2 (2), pp. 16–21.

Holt, David, H. (1990). *Management: Principles and Practices*, (2nd edition), Prentice Hall, New Jersey.

http://www.braou.ac.in/managementdescripationpages.php?id=8 – Retrieved on 25-02-2017.

https://www.vmou.ac.in/rc/1 — Retrieved on 25-02-2017.

IGNOU. 1994. "The Planning and Management of Distance Education Block-3" of *ES – 314: Management of Distance Education,* IGNOU, New Delhi.

IGNOU. (2016). *Profile 2016*, IGNOU, New Delhi.

Kaye, A., and Rumbe, G. (1981). *Distance Teaching for Higher and Adult Education*, Croom Helm, London.

Peters, O. (1998). *Learning and Teaching in Distance Education: Analyses and Interpretations from an International Perspective*, Kogan Page, London.

Rumble. G. (1986). *Planning and Management of Distance Education*, Croom Helm, London.

Sahoo, P. K. (1993). *Higher Education at a Distance*, Sanchar, New Delhi.

13.10 इकाई अंत अभ्यास

आप अपने स्वयं के हित में यहाँ दिए गए प्रश्नों पर संक्षिप्त टिप्पणी अथवा विस्तृत उत्तर लिख सकते हैं। इस प्रकार की टिप्पणी अथवा उत्तर आप की सत्रांत परीक्षा की तैयारी के दौरान आप की सहायता कर सकते हैं।

इकाई अन्त्य प्रश्न

1) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में प्रबन्धन कार्यों और प्रक्रियाओं का अवलोकन कीजिए। (1000 शब्दों में)।

2) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में प्रबन्धन के मुद्दों पर प्रकाश डालिए। (1,000 शब्दों में)।

3) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न प्रतिमानों/प्रणालियों पर चर्चा कीजिए। (1000 शब्दों में)।

4) आप एकल एवं दोहरी प्रणाली वाले संस्थानों की तुलना कैसे कर सकते हैं? (1000 शब्दों में)।

5) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की संगठनात्मक संरचना का वर्णन दीजिए। (1000 शब्दों में)।

6) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की विभिन्न उपप्रणालियों की भूमिका और महत्व की चर्चा कीजिए। (1,000 शब्दों में)।

7) दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के संकाय/कंसोर्टियम प्रतिमान का वर्णन कीजिए। (250 शब्दों में)।

8) प्रबंधन सूचना प्रणाली पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए? (250 शब्दों में)।

समालोचनात्मक चिन्तन के लिए प्रश्न

1) क्या आपको लगता है कि प्रशासनिक, शैक्षणिक और औद्योगिक उपप्रणालियों के बिना एक मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान का कोई अस्तित्व नहीं है? कारणों और उदाहरणों के साथ अपने स्तर को न्यायसंगत सिद्ध कीजिए।

क्रियाकलाप

विद्यालय प्रणाली की एक संगठनात्मक संरचना (प्रवाह चार्ट) बनाने का प्रयास कीजिए, जिसमें आप एक अध्यापक के रूप में हैं। यदि आप एक सेवारत अध्यापक नहीं हैं तो अपनी पसंद की किसी भी संस्था का चयन कीजिए, उनके अतिरिक्त जोकि भाग 13.5 में दिए गए हैं, और इसकी संगठनात्मक संरचना बनाएँ। (टिप्पणीः अपने पदाधिकारियों के पदानुक्रम की पहचान करें, फिर उनके पदानुक्रमिक सम्बन्ध को ऊपर से नीचे तक दर्शाते हुए चार्ट बनाने का प्रयास कीजिए।)